विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष 2022-23 चतुर्थ अंक

सीमाशुल्क मुंबई अंचल -II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन,
न्हावा-शेवा, तालुका-उरण, जिला-रायगड
महाराष्ट्र - 400 707

माननीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण जी के साथ विराजमान

श्री तरूण बजाज- राजस्व सचिव, श्री अजीत कुमार- अध्यक्ष सीबीआईसी,

एवं

अन्य वरिष्ठ सीमाशुल्क अधिकारीगणों के साथ।

विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष : 2022-23 चतुर्थ अंक

संरक्षक

मोहन कुमार सिंह

मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क

प्रधान संपादक

डी. एस. गर्ब्याल

आयुक्त

संपादक मण्डल

डी. पी. नायडू
आयुक्त

किरन वर्मा
आयुक्त

दीपक कुमार गुप्ता
आयुक्त

सोनल बजाज
आयुक्त

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

बालेश कुमार
सदस्य एवं विशेष सचिव
BALESH KUMAR
Member & Special Secretary

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
राजस्व विभाग
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली- 110001
Government of India
Ministry of Finance
Department of Revenue
Central Board of Indirect Taxes & Customs
North Block, New Delhi- 110001
Tel. : +91-11-23092628, Fax : +91-11-23092346
E-mail : memberinv.cbic@gov.in

संदेश

यह हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि सीमाशुल्क मुंबई अंचल-II अपनी विभागीय ई-पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। ई-पत्रिकाओं के प्रकाशन का दौर बदलते युग की पहचान है। यह न केवल पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल है बल्कि राजभाषा नीति के अनुपालन की दिशा में तकनीकी माध्यमों के उपयोग के निर्देशों को भी पूरा करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए विभागीय हिन्दी पत्रिकाओं का एक महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अतिरिक्त, विभागीय पत्रिका विभागीय उपलब्धियों और अन्य अभिव्यक्तियों को पूर्णरूपेण प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम भी है। यह प्रकाशन इन उद्देश्यों को पूरा करते हुए उच्च स्तर को स्पर्श करे, यही मेरी कामना है।

मैं इस प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

बालेश कुमार

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संरक्षक की कलम से....

विगत वर्ष 14 सितंबर, हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर मैंने इस अंचल में मुख्य आयुक्त का पदभार ग्रहण किया था और हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में मुझे मुंबई सीमाशुल्क अंचल– II की विभागीय पत्रिका 'शेवा कृति' के तीसरे अंक के विमोचन का भी अवसर प्राप्त हुआ था। इस वर्ष पुनः इस पत्रिका के चौथे अंक को आपको सौंपने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हर्ष का विषय है कि स्थानीय भाषा को शामिल करते हुए यह त्रि–भाषायी पत्रिका सभी ई–प्लेटफॉर्म पर आसानी से सुविधानुसार पढ़ी जा सकेगी।

मुंबई सीमाशुल्क अंचल– II राजस्व संग्रह के मामले में देश का सबसे बड़ा सीमाशुल्क जोन है और केंद्र सरकार की कुल राजस्व प्राप्ति में अपना अभीष्ट योगदान देता है। बीता वर्ष इस मामले में एक ऐतिहासिक वर्ष रहा, जब इस जोन ने आयात कर के रूप में एक लाख करोड़ रुपये से भी ज्यादा के राजस्व संग्रह को पार किया। राजस्व संग्रहण और निवारक उत्तरदायित्वों के जटिल सामंजस्य को ध्यान में रखते हुए, अपने सभी कार्यों के साथ–साथ अधिकारियों ने बहुत परिश्रम से अपनी विभागीय और व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों को इस पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष रखने का प्रयास किया है, जो कि सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन परंपरा उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी।

मैं सभी रचनाकारों और संपादक मण्डल को पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

– मोहन कुमार सिंह
मुख्य आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संदेश

सीमाशुल्क मुंबई अंचल–II की पत्रिका 'शेवा कृति' के चतुर्थ संस्करण के प्रकाशन पर आप सभी को बधाई देता हूँ।

राजस्व संग्रहण से जुड़े कार्यों को पूरा करते हुए राष्ट्र के निर्माण में सहयोग देना ही हमारा अभीष्ट ध्येय है और हम अपने इस ध्येय के प्रति गंभीर रहते हुए अपने जीवन से जुड़े बहुत से आयामों को भी पूर्ण करते हैं और 'शेवा कृति' इन आयामों को विभागीय मंच प्रदान करती है।

ई–पत्रिका सुविधाजनक समय में अध्ययन के लिए उपयुक्त है। तकनीक के यह नवप्रयोग प्रकाशन के क्षेत्र में नई क्रांति का द्योतक बन सकते हैं।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका अपने आगामी अंकों में भी सुरुचिपूर्ण रूप में प्रस्तुत होती रहेगी।

मैं पत्रिका से जुड़े अधिकारियों, रचनाकारों को शुभकामनाएं देता हूँ।

– डी पी नायडू
आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संदेश

'शेवा कृति' पत्रिका के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को बधाई देती हूँ, पत्रिका के संपादक मंडल में सम्मिलित होने का यह मेरा दूसरा अवसर है और मैं इस अंक में और भी उत्कृष्ट आलेखों और अपेक्षित सूचनाओं को पाती हूँ।

राजभाषा हिन्दी अपने वैज्ञानिक प्रयोगों और सरलता के लिए जानी जाती है। यह बात अलग है कि शासकीय प्रयोजनों के लिए हमें पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना होता है फिर भी सरल हिन्दी के शब्दों को भी शामिल करते हुए राजभाषा को एक नई समझ प्रदान की है, यह दृष्टिकोण आप पत्रिका के इस अंक में भी अनुभव करेंगे। किसी भी संस्थान की गृह पत्रिका उसका दर्पण होती है और प्रकाशन का उद्देश्य भाषा साहित्य को बढ़ावा देना और सृजनात्मक विचारों को एक मंच प्रदान करना है। पत्रिका 'शेवा कृति' इन मापदंडो को पूर्ण करती है।

मैं संपादक मंडल के सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

- किरण वर्मा
आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संदेश

जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की विभागीय गृह पत्रिका 'शेवा कृति' के चौथे अंक का प्रकाशन की सूचना पाकर मैं हर्षित अनुभव कर रहा हूँ। शीघ्र ही इस ई–पत्रिका का आनंद आप भी ले सकेंगे।

आर्थिक गतिविधियों के गढ़ के रूप में पहचाने जाने वाले सीमाशुल्क भवन में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन स्वयं में एक सुखद अनुभूति है। व्यस्त वित्तीय गतिविधियों के बीच सीमाशुल्क अधिकारियों की वैचारिक क्षमताओं को व्यक्त करने के लिए 'शेवा कृति' एक कारगर माध्यम है।

विभागीय पत्रिका का प्रकाशन केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के अनुपालन का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। आज राजभाषा हिन्दी 40 प्रतिशत से भी अधिक भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और सही अर्थों में जनभाषा कहलाने की अधिकारिणी है। हमारे कामकाज में राजभाषा हिंदी का निरंतर विस्तार हो रहा है। इस पत्रिका का त्रिभाषी होना, एक बड़ा पाठक वर्ग को सुनिश्चित करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में अधिकारियों द्वारा दिया गया योगदान सराहनीय है। मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

– दीपक कुमार गुप्ता
आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

संदेश

भाषा का किसी देश की संस्कृति, सभ्यता और साहित्य से गहरा संबंध होता है। राजभाषा हिन्दी राष्ट्र की अन्य भाषाओं से एक अभूतपूर्व तारतम्य स्थापित करती है। इसीलिए यह जनसामान्य की भाषा के रूप में सामने आती है और प्रशासन की भाषा भी बन गयी है।

भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश में हिन्दी भाषा सभी को एक सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। व्यापक वित्तीय क्रियाकलापों के मध्य राजभाषा कार्यों, साहित्य सृजन और सरकारी कामों में सामंजस्य रखते हुए 'शेवा कृति' हिन्दी के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनते जा रही है।

मैं 'शेवा कृति' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन कार्य से जुड़े अधिकारियों, रचनाकारों की सराहना करता हूँ, जिनके प्रयासों से हमारी गृह पत्रिका को एक साकार रूप मिला है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित

– सोनल बजाज
आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय
MINISTRY OF FINANCE
राजस्व विभाग
DEPARTMENT OF REVENUE
अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS

प्रधान संपादक की डेस्क से...

'शेवा कृति' के चौथे अंक को सौंपते हुए मुझे आनंद का अनुभव हो रहा है। इस वर्ष यह पत्रिका अपने ई-संस्करण के रूप में आपके समक्ष आ रही है।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन वर्षों से आपसी संपर्क का माध्यम रहा है, पत्रिकायें हमें भाषा के विविध रूपों, प्रयोगों को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें हम जीवन के सभी आयामों को पढ़ते हैं, अनुभव करते हैं। विश्व एक बड़ी व्यवस्था है और सूचनायें इस व्यवस्था के रीढ़ की हड्डी हैं। इस विचार के साथ पत्रिका के प्रकाशन का कार्य सूचनाओं के संग्रहण से आरंभ होकर अधिकारियों की विभिन्न अभिव्यक्तियों, आलेखों, कविताओं, रिपोर्टस, उपलब्धियों और संबद्ध चित्रावलियों के माध्यम से पूर्ण हुआ है। बच्चों की प्रस्तुतियाँ भी बड़ी आकर्षक रूप में प्रकाशित हुई हैं।

हिन्दी संघ की राजभाषा है और हमारे पारस्परिक संपर्क की सबसे सुविधाजनक भाषा भी है, मुंबई क्षेत्र के कार्यालयों में कार्मिकों की बड़ी संख्या आम बोलचाल की भाषा हिन्दी को ही संपर्क का माध्यम बनाती है। हमने प्रयास किया है कि इस अंक में भी स्थानीय जनमानस की भाषा को भी पर्याप्त स्थान मिले। जब्ती, राजस्व वसूली, खबरें जुटाने और तस्करी रोकने जैसे कार्यों में व्यस्त रहने वाले अधिकारियों के अनुभवों को रिपोर्टस के माध्यम से स्थान दिया गया है। साथ ही गणमान्य विशिष्ट अतिथियों के दौरा कार्यक्रमों, आयोजनों की संक्षेपिकायें भी प्रस्तुत की गई हैं।

आधुनिक तकनीक हमारे दैनिक जीवन में अब अनिवार्य भूमिका में है और यह ई-पत्रिका हमारे तकनीकी प्रयोग के आरंभिक प्रयासों का हिस्सा है। मैं मानता हूँ कि आगामी समय में पत्रिकाओं का प्रकाशन और भी सुविधाजनक होता जायेगा।

इस अंक के बारे में आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएं अपेक्षित रहेंगी।

- डी. एस. गर्ब्याल
आयुक्त

अनुक्रम

क्रम	रचना	रचनाकार/संकलनकर्ता	पृष्ठ संख्या
❖	माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री का दौरा कार्यक्रम विवरण	सचित्र विवरण	10
❖	राजस्व आँकड़े संकलित	मुख्य आयुक्त कार्यालय	19
❖	गणतंत्र दिवस–2022 समारोह		20
❖	हम प्रौद्योगिकी के दास बन गए	धर्मेंद्र कुमार (अधीक्षक)	21
❖	काव्यधारा	कमलेश कुमार (संयुक्त आयुक्त)	23
❖	मुफ़्त की रेवड़ी (लेख)	रवीन्द्र कुमार द्विवेदी (अधीक्षक)	24
❖	विभागीय उपलब्धियां		26
❖	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस		28
❖	गाँव में शहर की घुसपैठ (लेख)/ बदलाव (कविता)	जे. डी. चारण (अधीक्षक)	29
❖	राजभाषा (लेख)	रूपेश शंकर सक्सेना (वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी)	31
❖	काव्यधारा	अजीत कुमार (कर सहायक)	33
❖	हिन्दी पखवाड़ा– 2021		34
❖	विभागीय बस यात्रा के मेरे अनुभव–	संजय कुमार (अधीक्षक)	35
❖	योग दिवस–2022		37
❖	मराठी साहित्य (कविता/कहानी/हास्य)	संकलन– अनामिका शर्मा (अधीक्षक) मानसी चव्हाण (अधीक्षक)	38
❖	पुरातन शिक्षा व्यवस्था (लेख)	सुभाष शंकर झा (अधीक्षक)	43
❖	76वां स्वतंत्रता दिवस समारोह		45
❖	मर्कट (लेख)	दीपक शर्मा (मूल्यांकक)	46
❖	प्रायश्चित (कहानी)	कीर्ति राठोड (अधीक्षक)	48
❖	काव्यधारा	शरदचन्द्र झा (अधीक्षक)	49
❖	आजादी का अमृत महोत्सव के आयोजन	अक्टूबर, 21 से सितम्बर, 22 तक	50
❖	बच्चों का कोना (श्रेया रूपेश सक्सेना, सृष्टि सुजीत तिवारी)		59

केन्द्रीय वित्त मंत्री
माननीय निर्मला सीतारमण
का न्हावा शेवा दौरा
(नवम्बर, 2021)

केन्द्रीय वित्त मंत्री माननीय निर्मला सीतारमण जी का गेटवे ऑफ इंडिया मुंबई से प्रस्थान एवं जवाहर लाल नेहरू पत्तन पर स्वागत

गाजेबो शेवा हिल से बंदरगाह का विहंगम दृश्यावलोकन

तरूण बजाज, राजस्व सचिव एवं अजीत कुमार, अध्यक्ष सीबीआईसी की उपस्थिति में बंदरगाह के बुनियादी ढांचे का अध्ययन करते हुए माननीय मंत्री महोदया सुश्री निर्मला सीतारमण जी

केन्द्रीकृत पार्किंग प्लाजा में सीमाशुल्क परीक्षण सुविधा केन्द्र स्थापित करने के लिए माननीय मंत्री महोदया एवं अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा भूमि पूजन

माननीय मंत्री महोदया अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में ऑन-व्हील मोबाइल 'फैक्ट्री-सील्ड एक्सपोर्ट कंटेनरों' की कार्यप्रणाली और एन.एस.आई.जी. टर्मिनल का दौरा करते हुए

माननीय मंत्री महोदया अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में बी एम सी टी कंटेनर यार्ड में परिचालन एवं लोडिंग अनलोडिंग की जानकारी लेते हुए

समूह चित्र में माननीय मंत्री महोदया जी के साथ श्री तरूण बजाज, राजस्व सचिव, श्री अजीत कुमार अध्यक्ष सीबीआईसी, मोहन कुमार सिंह मुख्य आयुक्त सीमाशुल्क अंचल-II और विशेष सेवा अधिकारी

जवाहर लाल नेहरू सीमाशुल्क भवन न्हावा शेवा में सम्मान गारद एवं 24X7 आउट ऑफ चार्ज एकीकृत आरएमएस सुविधा का निरीक्षण करते हुए

सीमाशुल्क सभागृह में माननीय मंत्री महोदया एवं अन्य अतिथि अधिकारीगणों का स्वागत करते हुए मोहन कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त

माननीय मंत्री महोदया को सीमाशुल्क प्रदर्शन पर सूचना देते हुए रघुराम के., संयुक्त आयुक्त

अतिथि भवन लॉबी में सीमाशुल्क अधिकारियों के साथ खुली चर्चा में उपस्थित माननीय मंत्री महोदया और अन्य विभागीय अधिकारीगण

सीमाशुल्क मुंबई,अंचल-II
जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा

महत्वपूर्ण राजस्व आंकड़े 2021-22

क्रम संख्या	विवरण DETAILS	कुल (रुपये करोड़ में)
1.	सकल राजस्व Gross Revenue	116153
2.	शुल्कवापसी का बहिर्गमन Outgo of Drawback	5549.3
3.	धनवापसी का बहिर्गमन Outgo of Refund	220.61
4.	शुद्ध राजस्व Net Revenue	110944.4
5.	मूल सीमाशुल्क & अन्य BCD & Others (Net)	30419.75
6.	आईजीएसटी & मुआवजा उपकर IGST & Comp. Cess	80409.1
7.	आईजीएसटी धनवापसी संवितरण IGSTRefund Disbursement	22110.94
8.	टीईयू की कुल संख्या Total number of TEU's	5684644
9.	टीईयू की कुल संख्या (आयात) Total number of TEU's (Import)	2863818
10.	टीईयू की कुल संख्या (निर्यात) Total number of TEU's (Export)	2820826
11.	स्कैन किए गए कुल कंटेनर (टीईयू में)No. of containers scanned (in TEUs)	240237
12.	फाइल की गई बिल ऑफ इंट्रीस की संख्या No. of Bills of Entry filed (Home Consumption + Warehouse + X Bond)	857520
13.	नौवहन बिलों की संख्या (दिये गए एलईओ) No. of shipping Bills (given LEO)	1468158
14.	आयातित वस्तुओ का आकलन योग्य मूल्य (घरेलू उपभोग + वेयरहाउस + X बॉन्ड) Assessable value of imported goods (Home Consumption + Warehouse +X Bond)	539528.5
15.	शुल्कदेय माल का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्रीस का घरेलू उपभोग + X बॉन्ड) Value of dutiable goods (BEs Home consumption + X Bond)	457456.6
16.	शुल्कमुक्त माल का मूल्य (बिल्स ऑफ एंट्रीस का घरेलू उपभोग + X बॉन्ड) Value of duty free goods (BEs Home consumption + X Bond)	48985.15
17.	अधिसूचना के अनुसार छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone vide Notifications	142509
18.	निर्यात संवर्धन योजनाओं के द्वारा छोड़ा गया राजस्व Revenue forgone by EP Schemes	40939.92
19.	डीपीडी कंटेनरों की संख्या (टीईयू) No. of DPD containers (TEUs)	1013530

गणतंत्र दिवस – 2022 के अवसर पर मोहन कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त परेड का निरीक्षण, राष्ट्रीय ध्वजारोहण एवं समूह हॉल का उद्घाटन करते हुए

आलेख

हम प्रौद्योगिकी के दास बन गए

✍धर्मेंद्र कुमार, अधीक्षक

प्रौद्योगिकी से तात्पर्य उस प्रक्रम से है, जिसके माध्यम से किसी भी कार्य को सुनियोजित और सुव्यवस्थित ढंग से निष्पादित किया जा सकता है।

मानव सभ्यता के उत्थान काल से लेकर वर्तमान काल तक के इस लंबे सफर में मनुष्य को जब भी किसी चीज की कमी का आभास हुआ, विस्तार की संभावनाएं सफलीभूत हुई। वर्तमान प्रौद्योगिकी काल तक के इस लंबे सफर में हम लोगों ने विज्ञान के विभिन्न आयामों को समझने हेतु काफी परिश्रम किया है। यह सफर अभी बंद नहीं वरन् और भी तीव्र रफ्तार से आगे की ओर जारी है।

आज संपूर्ण विश्व प्रौद्योगिकी को अपनाने हेतु दृढ़ संकल्प है, चाहे वह समृद्ध राष्ट्र अमेरिका और इंग्लैंड हों या फिर एशियाई देश चीन और भारत हो। आज जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस होने लगी है मानो जैसे हम उसके गुलाम हो गए हैं, चाहे वह क्षेत्र आर्थिक हो या शैक्षिक या फिर औद्योगिक। हर जगह आज प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। धीरे-धीरे प्रौद्योगिकी मानव जाति को अपनी गिरफ्त में लेती जा रही है, जैसे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या आज समूचे विश्व हेतु चिंता का एक विषय है। ओजोन परत का दिन-प्रतिदिन क्षय होना प्रोद्योगिकी के दुष्परिणाम की गाथा कहती है। वहीं दूसरी ओर इसके कई सकारात्मक पहलू भी हैं।

यह प्रोद्योगिकी की ही देन है कि हम दूर बैठे पूरे विश्व की घटनाओं से अवगत हो जाते हैं। आज प्रोद्योगिकी के कारण ही हम से दूर रह रहे रिश्तेदारों एवं अन्य लोगों से बातचीत कर पाने में सक्षम हो पाए हैं। प्रौद्योगिकी के कारण ही हम आज कम्प्यूटर का प्रयोग क्षेत्र में तेजी से कर रहे हैं। यहां तक की प्रौद्योगिकी फिल्मों में भी अपनी भूमिका निभा रही है। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी का उपयोग न केवल चिकित्सा, कृषि, रक्षा, उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक, इंजीनियरिंग तथा धातु एवं क्षेत्रों में हो रहे हैं अपितु अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी इसका उपयोग किया जा रहा है। प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप दूरसंचार क्षेत्र की सुविधाओं जैसे फ़ैक्स, इंटरनेट, वेब व सेल्यूलर फोन ने पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँध रखा है। प्राचीन काल में हमें मौसम के बारे में इतना ज्ञान नहीं था कि हम तूफान की प्रगति अथवा चक्रवात के केंद्र का पता लगा सकें परन्तु इनकी भी एक सीमा होनी चाहिए अन्यथा इसका स्वरूप विध्वंसक हो सकता है। आज हम लोगों द्वारा मानव जीवन के विध्वंस हेतु इतने हथियार बनाए जा चुके हैं कि पृथ्वी के स्वरूप को कई बार बदल सकते हैं।

महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन से किसी ने पूछा था कि तीसरा विश्वयुद्ध कब शुरू होगा? तब उन्होंने जवाब दिया

> ***"महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन से किसी ने पूछा था कि तीसरा विश्वयुद्ध कब शुरू होगा? तब उन्होंने जवाब दिया था कि तीसरे विश्वयुद्ध के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर चौथे विश्व युद्ध के बारे में बता सकता हूँ कारण, चौथे विश्व युद्ध के लिए कोई इस दुनिया में जिंदा रहेगा ही नहीं।"***

था कि– ''तीसरे विश्वयुद्ध के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर चौथे विश्व युद्ध के बारे में बता सकता हूँ कारण, चौथे विश्व युद्ध के लिए कोई इस दुनिया में जिंदा रहेगा ही नहीं।''

अतः यही उचित होगा कि हृदया और मस्तिष्क का समन्वय ही प्रौद्योगिकी को उसकी सीमा में रहने हेतु बाध्य कर सकता है अर्थात् प्रौद्योगिकी का प्रयोग मानव हित हेतु किया जाना चाहिए। मनुष्य अब शारीरिक क्रियाकलापों के जरिए कार्य को संपादित करना धीरे–धीरे कम करता जा रहा है और यह स्थान धीरे–धीरे मशीनी उपकरणों ने लेना शुरू कर दिया है। आज मनुष्य चाँद पर जाने में सक्षम है, जो प्रौद्योगिकी की सफलता की कहानी कहता है। आज जिस राष्ट्र में प्रौद्योगिकी की प्रचुरता है, वह राष्ट्र उतना ही उन्नत और समृद्ध है। वस्तुतः प्रौद्योगिकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, व्यवसाय क्षेत्र की बात अगर हम करें तो यह स्पष्ट होता है कि प्रौद्योगिकी के बल पर ही द्वितीय विश्वयुद्ध में पूरी तरह से पीड़ित राष्ट्र जापान ने लगभग 60 वर्षों में स्वयं को उन्नत एवं समृद्ध राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा किया है। आज गरीब से गरीब राष्ट्र भी प्रौद्योगिकी अपनाने हेतु तत्पर है। अगर कृषि क्षेत्र की बात की जाए तो आज प्रौद्योगिकी को अपनाकर ही हम उन्नत बीजों का निर्माण कर पाने में सक्षम हो सके हैं। विकास के प्रारंभिक चरण में प्रौद्योगिकी को कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनाया गया परन्तु आज हालात ऐसे हैं कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम प्रौद्योगिकी का उपयोग करते चले जा रहे हैं।

प्रौद्योगिकी जहां एक ओर सफलता और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं दूसरी ओर इसके कुछ दुष्परिणाम भी हमें देखने को मिलते हैं और इस दुष्परिणाम को कम करने या समाप्त करने हेतु एक और प्रौद्योगिकी का मार्ग प्रशस्त करती है। आज प्रौद्योगिकी के सहयोग से सौर मंडल के रहस्यों को सुलझाने की दिशा में हम सक्षम हो पाए हैं और समय दर समय हम इस ओर प्रगति कर रहे हैं।

यह कहना गलत ना होगा कि एक ओर जहाँ प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण विश्व को एक नए रूप में चित्रित किया है। इसने हम लोगों की जीवन शैली को बदलकर रख दिया है, वहीं दूसरी और यह भविष्य में उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के संकट का भी मार्ग प्रशस्त करता है, धीरे–धीरे यह प्रतीत हो रहा है कि हम लोगों के द्वारा ही बुने गए प्रौद्योगिकी के जाल में हम खुद आप फँसते चले जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हम लोग प्रौद्योगिकी की दासता को स्वीकार करने लगे हैं। आज लगभग हर राष्ट्र उन्नत बनने की होड़ में लगा है, अप्रत्यक्ष रूप से वो खुद अपनी ही बर्बादी का सामान बना रहा है।

दास, चाहे वह किसी भी व्यक्ति के हों या फिर प्रौद्योगिकी के, इसकी प्रवृत्ति अथवा प्रकृति चाहे जो भी हो इसे मानवीय दृष्टिकोण से या फिर भौगोलिक दृष्टिकोण से स्वीकार नहीं किया जा सकता है इस तथ्य से नकारा नहीं जा सकता है कि वर्तमान विश्व विकास के जिस दौर से गुजर रहा है शायद यह प्रौद्योगिकी के बिना संभव ना होता।

यह तो आनेवाला समय ही तय करेगा कि हम प्रौद्योगिकी की दासता से मुक्त होंगे अथवा नहीं। कुछ तथ्य ऐसे होते हैं, जिनका हल मानव जाति के पास नहीं होता है हम सिर्फ समय की धारा में बह सकते हैं परन्तु उसे रोक नहीं सकते हैं अन्यथा यह कह सकते हैं कि प्रौद्योगिकी जहां एक ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रशंसनीय है वहीं भौगोलिक दृष्टिकोण से यह प्रश्नगत है।

आत्म निर्भर भारत है
हर देशवासी का सपना,
अप्रत्यक्ष कर के भुगतान से
मुमकिन है इसे पूरा करना।।

– निलेशा सराफ, मूल्यांकाक

कर नहीं है भार,
है देश का आधार

– शरद चन्द्र झा
अधीक्षक

✍ कमलेश कुमार, संयुक्त आयुक्त

एकमेव राह की तलाश

संघर्षरत है प्रतिपल यह जीवन,
शांति और आनंद की चाह में।
रचता है जिसके लिए वह ख़्वाहिशें नित नवीन,
भटकता उनको पूरी करने की राह में।।

कुछ ख़्वाहिशें होती हैं पूरी,
तो कुछ रह जाती हैं अधूरी।
ये अधूरी ख़्वाहिशें कराती दु:ख का भान,
मन में रहता सदा उसी का मलाल।
पूरी होने पर भी ये कराती एक खालीपन का भान,
पर क्षणिक खुशी के बाद।।

इस खालीपन को भरने दौड़ती,
मन में एक ख़्वाहिश बड़ी-सी।
फिर वही पुराना सिलसिला,
कुछ अधूरी और कुछ पूरी ख़्वाहिशों का।।

यही सोचता मन कमल,
जीवन में बस एक ख़्वाहिश की चाह।
जो शांति और आनंद की,
करे प्रशस्त राह।।

मनभय और लोभ

मनभय और लोभ ही मूल है।
तेरे हर शूल का।।
उठे है मन में सबसे पहले,
विचार संकल्प और विकल्प का।
बुद्धि परख फिर उसे,
ठेलती कर्म की ओर।।

कर्म वहीं फिर,
बनता नए कर्मों का आधार।
रचता इस तरह से नित नव,
एक कर्मजाल का संसार।।
जिसमे फँसता जाता,
ये चंचल मनवा हमार।।

इसीलिए कहता कवि कमल,
सब शूल का मूल है तेरा भय व लोभ।
त्याग इसे मन से अभी,
और दूर हो जा क्लेश से।।

फिर पाएगा,
चिर आनन्द में गोते लगाता।
स्थिर और शान्त मन,
जिसको तलाशता कवि कमल समेत संसार है।।

Life means spirit of existence,
Existence creates desire of something,
Desire creates difficulties on the way of journey,
Journey creates adventures in life,
Adventure provides sensation in life,
Sensation gives zeal to work,
Zeal provides achievements,
And achievement gives meaning to life.

जीवन अस्तित्व भाव है,
भाव कामना जगाता है,
इच्छा यात्रा की कठिनाई बनती है,
यात्रा जीवन का रोमांच है,
रोमांच जीवन को संवेदना देता है,
संवेदनाएं कार्य को उत्साहित करती हैं,
उत्साह उपलब्धि देता है,
और उपलब्धि जीवन को अर्थ देती है।

आलेख

मुफ़्त की रेवड़ियां

✍ रवीन्द्र कुमार द्विवेदी,
अधीक्षक

आज हमारे देश में 'मुफ़्त की रेवड़ियां' बांटकर वोट जुटाने की संस्कृति जड़ जमा रही है। यह 'रेवड़ी कल्चर' देश के विकास के लिए बहुत घातक है। देश के लोगों खास तौर से युवाओं को इस संस्कृति के खिलाफ सतर्क रहने की जरूरत है। रेवड़ी कल्चर वालों को लगता है कि जनता जनार्दन को मुफ़्त की रेवड़ी बाँटकर, उन्हें खरीद लेंगे। उनकी इस सोच को हराना है, रेवड़ी कल्चर को देश की राजनीति से हटाना है। राजनीतिक दल चुनावों के समय खूब वादे करते हैं। चुनाव जीतने के लिए कई बार इतने बड़े-बड़े वादे कर दिये जाते हैं कि जिसे पूरा ही नहीं किया जा सकता। जैसे कि राजनीतिक दल सत्ता पाने के लिए जनता को मुफ़्त की बिजली, पानी, साइकल एवं लैपटाप तक देने का वादा कर देते हैं। इससे राज्य पर अत्यधिक बोझ पड़ जाता है और आर्थिक संसाधन कम पड़ जाते हैं। यह संस्कृति घातक है। इसके कई दुष्परिणाम होते हैं। अपने वोट बैंक को साधने के लिए इन मुफ़्त की घोषणाओं को ही मुफ़्त की रेवड़ी बाँटना कहा जाता है।

माननीय प्रधानमंत्री जी के अनुसार 'रेवड़ी कल्चर' को बंद किया जाना चाहिए। उच्चतम् न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर कर राजनीतिक दलों द्वारा मुफ़्त वाली घोषणाओं और वायदों पर रोक लगाने की मांग की गयी है।

हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री मुफ़्त की योजनाओं को रेवड़ियां बताकर विपक्षी दलों को घेर रहे हैं। दूसरी तरफ यह मामला पीआईएल के तौर पर सुप्रीम कोर्ट में भी पहुँच गया है। मुफ़्त की रेवड़ी पर संग्राम मच गया है। कोई किसी पर गुमराह करने का आरोप लगा रहा है तो कोई अमीरों को फायदा पहुँचाने का आरोप लगा रहा। मुफ़्त वाली स्कीमों का मामला एक तरफ तो सुप्रीम कोर्ट में है तो दूसरी तरफ इस पर सियासी संग्राम छिड़ गया है। कोई मुफ़्त वाली स्कीमों को मुफ़्त की रेवड़ी कहने पर आपत्ति जता रहा है तो कोई सवाल कर रहा है कि अगर गरीबों को सुविधा देना रेवड़ी है तो 'अमीरों को मुफ़्त में दी जाने वाली सुविधाओं पर कब बहस होगी।

एक रैली के दौरान प्रधानमंत्री जी ने कह दिया कि हमारे देश में मुफ़्त की रेवड़ी बाँटकर वोट बटोरने का कल्चर लाने की कोशिश हो रही है। ये रेवड़ी कल्चर देश के विकास के लिए बहुत घातक है। इस रेवड़ी कल्चर से देश के लोगों को बहुत सावधान रहना है। सीधे तौर पर निशाना उन नेताओं की तरफ था, जो फ्री पानी-बिजली जैसी योजनाएं लाने का वादा करते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री जी के अनुसार 'रेवड़ी कल्चर' को बंद किया जाना चाहिए। उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर कर राजनीतिक दलों द्वारा मुफ़्त वाली घोषणाओं और वायदों पर रोक लगाने की मांग की गयी है।

'रेवड़ी कल्चर' के पक्ष में तर्क:-

कई राजनीतिक दल का कहना है कि अपने देश के बच्चों को मुफ़्त और अच्छी शिक्षा देना और लोगों का अच्छा और मुफ़्त इलाज करवाना- इसे मुफ़्त की रेवड़ी बाँटना नहीं कहते। वे एक विकसित और गौरवशाली भारत की नींव रख रहे हैं। ये काम कई साल पहले हो जाना चाहिए था। जिन नि:शुल्क सेवाओं को मुफ़्त की रेवड़ी कह रहे है वो जनता के पैसे से दी जा रही है। जनता टैक्स के पैसे से सरकार का खजाना भरती है और उसी जनता के पैसे से जनता को सुविधाएं दी जाती है। इसलिए इसे

मुफ़्त की रेवड़ी कहकर जनता को अपमानित नहीं किया जाना चाहिए।

एक प्रमुख राजनीतिक पार्टी मुफ़्त की रेवड़ी शब्द पर ऐतराज जताया है। उनका कहना है कि मुफ़्त की रेवड़ी कहकर जनता को अपमानित मत कीजिए। एक राज्यसभा सांसद ने आरोप लगाया कि बड़े उद्योगपतियों के लगभग 11 लाख करोड़ रुपये के कर्ज माफ कर दिये गए लेकिन आम जनता की बारी आती है तो आटे पर टैक्स, दूध पर टैक्स, पेट्रोल पर टैक्स, दवाओं पर टैक्स।

'रेवड़ी कल्चर' के विरोध में तर्क :-

'रेवड़ी कल्चर' एक (गंभीर मुद्दा) है। कई राज्यों में फ्री बीज़ बजट नियमित बजट से आगे जा रहा है। सरकार के प्रवक्ता ने कहा कि आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लिए काम करना जन कल्याण कार्यों के दायरे में आता है। इसलिए यह कार्य 'रेवड़ी कल्चर' में नहीं आता है। सरकार एवं आम जनता का मत है कि मतदाताओं से अनुचित राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए ऐसे लोकलुभावन उपायों (फ्री बीज़) पर पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए क्योंकि वे संविधान का उल्लंघन करते हैं और चुनाव आयोग को उपयुक्त निवारक उपाय करने चाहिए। केंद्र सरकार भी इस प्रथा के खिलाफ जनहित याचिका के समर्थन में है। केंद्र ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता के माध्यम से कहा, "मुफ़्त वितरण अनिवार्य रूप से भविष्य की आर्थिक आपदा की ओर ले जाता है और मतदाता भी चुनाव के समय निष्पक्ष तरीके से चुनने के अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकते हैं।"

जनहित याचिका का समर्थन करते हुए, सॉलिसिटर जनरल ने एक बार फिर कहा कि पोल पैनल को न केवल लोकतंत्र की रक्षा के लिए बल्कि देश के आर्थिक अस्तित्व की रक्षा के लिए फ्री बीज संस्कृति को भी रोकना चाहिए।

जब राजनीतिक पार्टियां अपने लोक हित के कार्यों से जनता का समर्थन नहीं प्राप्त कर पाती हैं तो वे सत्ता में आ जाने पर जनता को बिजली, पानी एवं शिक्षा आदि मुफ़्त में देने का वादा कर देती हैं। इस प्रकार वे प्रलोभन देकर जनता का मत हासिल करने में कई बार सफल भी हो जाती हैं। इस तरह प्रलोभन के कारण मतदाता भी चुनाव के समय निष्पक्ष तरीके से चुनने के अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकते हैं।

अल्बर्ट आइंस्टीन (Albert Einstein) के अनुसार हमें उन चीजों के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है, जो हमें मुफ़्त में मिलती है।

हाल ही में मुफ़्त वितरण संस्कृति के कारण श्रीलंका में 2019 में वायदों को पूरा करने के लिए करों में भारी कटौती की गई। आर्थिक स्थिति खराब हो गई। राष्ट्रपति को देश छोड़कर भागना पड़ा। मुफ़्त वितरण संस्कृति के कारण वेनजुएला की भी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई है। बेरोजगारी चरम सीमा पर है।

मुफ़्त वितरण संस्कृति के कारण देश के पास आर्थिक संसाधन कम पड़ जाते हैं। मुफ़्त वितरण के लिए संसाधन जुटाते-जुटाते, पर्याप्त राजस्व न मिलने के कारण जनकल्याणकारी योजनाएं जैसे कि सड़क एवं पुल के निर्माण कार्य, उचित शिक्षा, चिकित्सा सुविधाओं के लिए आधारभूत इनफ्रास्ट्रक्चर आदि की व्यवस्था नहीं हो पाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह 'रेवड़ी कल्चर' देश के विकास के लिए बहुत घातक है। देश के लोगों खास तौर से युवाओं को इस संस्कृति के खिलाफ सतर्क रहने की जरूरत है। एक मत यह भी है कि तर्कहीन मुफ़्त योजनाओं की घोषणा का वादा करने वाले किसी भी राजनीतिक दल का चुनाव चिह्न जब्त करने या पंजीकरण रद्द करने का निर्देश दिया जाना चाहिए। यदि देश की जनता शिक्षित है, जागरूक है तो वह इस तरह की राजनीतिक पार्टियों के झांसे में नहीं आएगी और वास्तविक रूप से जनता के हितों को समर्पित पार्टियों को ही अपना मत देगी।

हर्ष का विषय है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय रेवड़ी कल्चर' के मुद्दे पर गंभीर है और उसने संबंधित जनहित याचिका पर उचित निर्णय लिया है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सभी हितधारकों को इस पर विचार करना चाहिए और 'गंभीर' मामले से निपटने के लिए सुझाव देना चाहिए और यह भी कहा कि केंद्र सरकार, वित्त आयोग, विधि आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक के साथ-साथ सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों को सुझाव देने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए और एक विशेषज्ञ पैनल का गठन किया जाना चाहिए। सभी पक्षों को निर्देश दिया कि वे इस तरह के निकाय की संरचना के बारे में सुझाव दें ताकि एक तंत्र या निकाय के गठन के लिए एक आदेश पारित कर सकें जिससे कि वे सुझाव दे सकें। अंततः भारत के चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को कार्यान्वयन पर कदम उठाने की आवश्यकता है।

❖❖❖

IRS अधिकारी ने रचा इतिहास

भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के अधिकारी वुंडेला रामनाथ रेड्डी ने 6 अगस्त, 2022 को तेलिन, एस्टोनिया (यूरोप) में कठिनतम् 'आयरनमैन ट्रायथलॉन' को पूरा करने वाले पहले आई.आर.एस. अधिकारी बनकर इतिहास रच दिया। उन्होंने इसे 15 घंटे 52 मिनट में पूरा किया।

अंतर्राष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस - 2022 के अवसर पर श्री रघुराम के., संयुक्त आयुक्त को विश्व सीमाशुल्क संगठन द्वारा प्रदत उत्कृष्टता प्रमाणपत्र को सौंपते हुए माननीय मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क, 63वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप / प्रतियोगिता - 2019-2020 कांस्य पदक विजेता इंद्रजीत मोहिते, कर सहायक का प्रतिनिधित्व।

08 मार्च 2022 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में उपस्थित अपर आयुक्त एवं मुख्य लेखा अधिकारी के साथ सीमाशुल्क महिला अधिकारीगण

लेख

गाँव में शहर की घुसपैठ

✍ जे.डी. चारण, अधीक्षक

मैंने कुछ पंक्तिया पढ़ी थी जो कुछ इस प्रकार है,

"पर देखा है मैंने थोड़ा-सा शहर,
घुस रहा है गाँव में,
कर रहा है कोई चुपके से छेद नाव में।"

अक्सर माना जाता है कि गाँव में शहर का घुसना यानी कि गाँव का विकास होना, तरक्की होना है तो फिर गाँवों का विकास नही होना चाहिए? आम धारणा ये है कि भारत की आत्मा गाँव में बसती है, गाँवों में सुकून है, भाईचारा है, मानवीयता अभी भी जिंदा है, लोग एक दूसरे की सहायता करते हैं, बड़े-बुजुर्गों एवं स्त्रियों का सम्मान करते हैं इत्यादि, इत्यादि। इसके विपरीत शहरों के बारे में ये बताया जाता है कि बहुत भागदौड़ भरी ज़िंदगी है, मन को शांति नहीं मिलती, तनाव भरी ज़िंदगी है, मानवता, आपसी भाईचारा अपनापन जैसा कुछ नहीं है, लोग बहुत ज्यादा व्यावसायिक होते हैं एवं इंसान एक मशीन बन जाता है। ये सारी बातें आज भी काफी हद तक कई मायनों में सही भी है।

परन्तु सच क्या है?

सच केवल वही जानता है जो शहर एवं गाँव दोनों से बेहद करीब से जुड़ा हो या जिसको दोनों तरह के माहौल में ज़िंदगी जीने का मौका मिला हो। एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है, 'खाली दिमाग शैतान का घर''। गाँवों में कुछ ऐसा ही हो रहा है।

पिछले करीब 10 साल से भी ज्यादा समय से मुझे गाँव एवं शहर (मुम्बई) दोनों की ज़िंदगी जीने एवं बहुत करीब से देखने का मौका मिला और मैं एक बात तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि आज गाँवों की हालत कुछ इस प्रकार की है, जो कभी पश्चिमीकरण की वजह से भारत की मानी जाती थी या आज भी मानी जा रही है कि हम लोगों ने पश्चिमीकरण को अपने सांस्कृतिक आदर्शों की कीमत पर अपनाया यानी कि हमने पश्चिम की उदारवादी एवं विकासवादी संस्कृति को तो अपनाया परन्तु अपने मूल सांस्कृतिक ताने-बाने को भूल गए। परिणाम हुआ 'ऊहापोह की ज़िंदगी', न इधर के, न उधर के, अपनी असली पहचान भूल कर बीच में लटक गए। आप यदि एक पौधे की जड़ें जमीन से काटकर, उसको लटकाकर, उसके ऊपर पानी डालते रहोगे तो क्या वह पौधा बढ़ेगा?

आज गाँवों की हालत कुछ ऐसी ही है। विकास एवं शहरीकरण की नकल में, अपने आप को आधुनिक (modern and professional) दिखाने के चक्कर में गाँवों की मूल आत्मा एवं संस्कृति को हम भूल गए। आपको मौका मिले तो अपने आसपास के गाँवों को देखें, हर गाँव में कलह है, आपसी विवाद है, भाई से भाई का विवाद, आपसी तकरार है, दोनों दुश्मन बन गए है। आपसी भाईचारा, मानवता, आपसी सहयोग इत्यादि के आदर्श तो मानो लुप्त हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि गाँवों में लोगों के पास आपसी झगड़े एवं विवाद के अलावा कुछ काम है ही नहीं। छोटी-छोटी चीजों को लेकर तकरार, तनाव, मनमुटाव होना तो आम बात हो गयी है और सबसे बड़ी बात जो मैंने अनुभव की वो यह कि गाँव में लोग किसी की सफलता को पचा नही पाते, भले ही आपके सामने आपकी प्रशंसा करें परन्तु मौका मिलते ही आपकी टांग खींचने में कोई कसर नही छोड़ेंगे।

मानवता तो गायब ही होती जा रही है। एक बार मुझे मेरे गाँव से जिला मुख्यालय तक बस में सफर करना पड़ा, जाहिर है गाँवों में यातायात के साधनों की अपनी सीमितता है, जो है उसी से काम चलाना पड़ता है। यात्रियों की भरमार की वजह से मुझे भी बस में बैठने की जगह नही मिली जो कि सामान्यतया होता ही है। लिहाजा मुझे खड़े-खड़े ही सफर करना पड़ा, रास्ते में एक महिला और बच्चा बस में चढ़े, एक खिड़की वाली सीट पर हट्टा-कट्टा नौजवान बैठा था, उस महिला ने उस जवान से बोला कि उसके बच्चे को उल्टियां होती हैं उसको खिड़की वाली सीट पर बैठने दो परन्तु उस जवान ने उस लड़के को सीट नहीं दी। चूंकि बच्चे को वाकई उल्टियां होने की समस्या थी तो मुझे भी लगा कि कुछ सिफारिश कर दें। मैंने बोला कि सीट न भी दो तो कम से कम उसको खिड़की की तरफ खड़ा तो होने दो ताकि वो उल्टी (वोमिटिंग) बस से बाहर कर सके अन्यथा सबके ऊपर करेगा लेकिन उस औरत के बार-बार मिन्नतें करने के बावजूद भी वो जवान अपने सीट से नहीं उठा और बच्चे को सीट नहीं दी। मेरे लिए ये वाकया बहुत बड़ा झटका था, किधर चली गयी हमारी इंसानियत?

सच बताऊँ तो ये हादसा यदि शहर (मुंबई) में होता तो कोई भी सीट दे देता उस बच्चे को, परन्तु अफ़सोस कि जो गाँव के लोग स्त्री या बच्चे को खड़ा देखकर स्वतः ही सीट देते थे, वो आजकल नहीं दिखता, तर्क दिया जाता है कि मैंने भी किराया दिया है मैं क्यों खड़ा होऊं? सचमुच गाँव बदल गए हैं और जो शुरू की पंक्तियाँ मैंने लिखी, कि सुना है थोड़ा सा शहर घुस रहा है गाँव में, सच्चाई ये है कि शहर नही शहर का पॉल्युशन (जहर) घुस गया है गाँव में। जो गाँव में भी वातावरण एवं लोगों की मानसिकता को दूषित कर रहा है। आज गाँव में लोगों पर व्यक्तिगत अहम् हावी है, एक दूसरे की सहायता के लिए समय नहीं है परन्तु आपसी विवाद के लिए बहुत समय है। सबसे बड़ी मजे की बात ये है कि दो लोगों को आपस मे लड़ाकर के फिर मुद्दे के सुलझाने के लिए पंच बनने में लोगो को बड़ा मजा आता है। इन सबको देखकर ऐसा लगता है कि आज के शहर की ज़िंदगी ही ठीक है, आपसी विवाद बहुत कम है, किसी को किसी की ज़िंदगी से कोई लेना-देना नहीं, सब अपने अपने काम मे मस्त हैं। गाँव में लोग नुक्ताचीनी बहुत करते हैं, आपने सौ बार सामने वाले कि सहायता या अच्छे काम कर दिए हों मगर एक बार गलती से कुछ बुरा या सामने वाले की मदद नही की तो आप उसकी नजर में बेकार हो। लोग दूसरों के गुण भूल जाते हैं और अवगुण की ही चर्चा करते हैं। अक्सर लोग अपना काम निकलने के बाद आपका गलत आकलन कर लेते हैं। आप पहले भी वही थे अब भी वहीं हो परन्तु सामने वाले के लिए उस समय आप सही थे मगर अब गलत हो। ये कैसे होता है मेरी समझ से बाहर है।

मैंने जो भी ऊपर लिखा है वो अपने पिछले 10-12 साल के अनुभव के आधार पर और गाँवों की बदलती तस्वीर के आधार पर लिखा है। शायद ये बदलाव आपने भी महसूस किया होगा, यदि नहीं किया तो अब गौर कीजिएगा, आपको कुछ बदलाव जरूर दिखेगा।

बदलाव

बदलाव की बयार में ऐसे बह चले हम,
सारे रिश्ते नाते और बचपन को भूल चले हम।
चलो आओ, आज फिर से बच्चे बन जाए हम,
कुछ पल के लिए ही सही इन्सान बन जाएं हम।

पीठ पर बस्ते का बोझ उठाए कोसों दूर चलकर,
चिलचिलाती धूप में जब स्कूल से लौटते थे,
बड़ा सुकून मिलता था उन पलों में जब,
लू के थपेड़ों में किसी पेड़ की छाँव तले सुस्ताते थे।

पसीने की बूंदे शरीर पर चित्रकारी करती जब मिट्टी पर टपक जाती थीं,
मिट्टी भी अपनी बनकर बदन से चंदन-सी लिपट जाती थी।
पाऊडर-लोशन जैसे खुशबुदार कॉस्मेटिक्स तो नहीं थे,
पर स्वच्छ मिट्टी की सोंधी खुशबू उससे कम भी तो नहीं थे।

रोज आते जाते अपनी पगडण्डियाँ खुद बनाते थे,
सर्दी-गर्मी, धूप-छाँव से ना घबराते थे,
सुख-दुःख की इस आँख मिचौली को हँसकर सह लेते थे,
चट्टान से बड़े हर मुश्किल से डटकर पार उतर जाते थे।

ग्वाल बाल संग सांझ-सवेरे उछल-कूद करते थे,
चौपालों में धूम मचाते गीत मल्हार के भी गाते थे,
अखाड़ों में कुश्ती-मल्लयुद्ध के हुनर दिखलाते थे,
दूध-दही भरपूर खाकर बछड़ों के संग होड़ लगाते थे।

दादा-नाना से वीरों के परवाड़े भी सुनते थे,
बैलों के घुंघरू की रुनझुन में, खेतों में हुंकार भरते थे,
पंछियों के कलरव गान में, गाते-गुनगुनाते सबका मन मोह लेते थे।
अपनापन से प्यार दोस्ती से रहते थे, दुःख-दर्द को मिलकर सहते थे।
मन में आशा के दीप जलाए, उम्मीदों के आँचल थामें,
हर रोज नई उमंगों के साथ मिलते थे।

खैर जिला मुख्यालय पहुँचकर कुछ पुराने दोस्तों एवं रिश्तेदारों से मुलाकात हुई, अच्छा लगा, तब लगा कि कुछ अपनापन अभी भी बचा है गाँव में। ये अलग बात है कि कुछ दोस्तों के पास मुलाकात के समय नहीं था। शायद वो भी शहरी घुसपैठ के शिकार थे। जाते-जाते उसी कविता की पंक्तियाँ जिससे आरम्भ किया था, के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ।

"मेरी दुआ है कि खूब तरक्की करे ये जमाना,
मगर गाँव की लाश पर शहर मत उगाना।"

❖❖❖

सरकारी कार्यालय और राजभाषा हिन्दी

'कुछ भ्रांतियाँ, कुछ बहाने, कुछ अनभिज्ञता'

✍ रूपेश शंकर सक्सेना,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

Government office and 'Official Language' Hindi
'Some misconceptions, Some excuses, Some ignorance'

जैसा कि लेख के शीर्षक से ही पता चल रहा है कि इसमें आज की वास्तविकता को समाधानों की चाशनी में सान कर परोसा जाने वाला है। कड़वे कटाक्षों में मीठापन भी होना चाहिए। हमारे बहुत बड़े से कार्यालय विन्यास में जहां करीब-करीब 4 दर्जन सेक्शन कार्यरत हैं, वहीं एक कोना, एस अदना-सा अनुभाग राजभाषा अनुभाग भी है, जिसे आम भाषा में हिन्दी अनुभाग भी कहते हैं।

सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार पुरजोर प्रयास कर रही है, जिसके चलते राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 के साथ-साथ, समय-समय पर जारी विभिन्न सरकारी निर्देशों के अनुपालन करके, विभिन्न प्रशिक्षणों, सेमिनार, कार्यशालाओं के माध्यम से राजभाषा प्रावधानों के कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा पदों की संख्या में वृद्धि भी इसी रणनीति का हिस्सा है।

यह तो बात रही नियमों, व्यवस्थाओं की। हमने कार्यालयों में निरीक्षण किए, वहाँ की कार्यशैली द्विभाषी कर दी, सबको हिदायते दे दी गईं, अनुवाद किए गए, जांच बिन्दु स्थापित करवा दिये, निरीक्षण करवाये गए, राजभाषा प्रोत्साहन योजनाए लागू करवा दीं। वगैरह-वगैरह। हर तीन महीने में जब रिपोर्ट सामने आती है तो सारा दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। सारी योजनाएं, सारे संकल्प, सारी हिदायतें गिरता हुआ ग्राफ दिखा रही होती हैं और राजभाषा अनुभाग वालों को मुँह चिढ़ा रही होती हैं। ऊपर से लोगों के ताने कि 'हिन्दी अनुभाग क्या करता है, जरूरत क्या है इस अनुभाग की, उनके पास काम ही क्या है, मैं ही क्यों काम करूँ हिन्दी में, दूसरा अनुभाग क्यों नहीं..।' राजभाषा वालों को तो इस तरह के कटाक्षों, सद्वाक्यों की जैसे आदत सी हो गई है। हम बहुत गर्व से कहते हैं कि हम तो सीधे महामहिम राष्ट्रपति महोदय से आदेश प्राप्त करते हैं, पर शायद हम खुद को ही खुश करते रहते हैं। इस उहापोह की स्थिति में यदि हम निराशवादी सोच रखेंगे तो यह हमारी हार होगी। कब तक हम इस धारणा को ढोते रहेंगे कि 'राजभाषा एक आग्रह का विषय' है। ये धारणा हमें कमजोर बनाती ही। आज यदि राजस्व जैसे विभाग के किसी बहुत बड़े कार्यालय विन्यास में राजभाषा हिन्दी के कम प्रयोग, अधिकारियों की असंवेदनशीलता के मूल कारणों का विश्लेषण करें तो हमारे सामने तीन प्रमुख बातें हमारे समक्ष नजर आतीं हैं वो हैं; पहला- राजभाषा हिन्दी के प्रति हमारी 'भ्रांतियाँ', दूसरा- राजभाषा को लेकर हमारी 'बहानेबाजी' और तीसरा राजभाषा के प्रति हमारी -'अनभिज्ञता'।

सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर 'भ्रांतियाँ' पालना बहुत ही साधारण सी बात है और यह सभी करते हैं। 'भ्रांतियाँ' अर्थात् हमारा किसी बात पर एक 'दृष्टिकोण' या राय जो गलत है क्योंकि वह दोषपूर्ण सोच या समझ पर आधारित है। किसी भी कार्यालय में आम राय यही है कि हम अनुवाद क्यों करवाएं, हम राजभाषा अनुभाग के आदेश क्यूँ माने; मैं, फलां फलां अधिनियम, नियम, आदेशों के अंतर्गत सौपें हुए सरकारी कार्य कर तो रहा हूँ। अमुक अधिकारी अपने सरकारी उत्तरदायित्वों में राजभाषा हिन्दी के नियम एवं व्यवस्थाओं को, अधिनियम के प्रावधानों को अपने कार्यों में साथ लेकर कार्यान्वित करने को आवश्यक नहीं मानता, क्योंकि जब इससे संबंधी कोई प्रशिक्षण,

कोई कार्यशाला या कोई सेमीनार आयोजित हो रहा था तब उन्होंने उसमें भाग लेना आवश्यक नहीं समझा और इसके चलते वे 'भ्रांतियों' के शिकार हो रहे होते हैं।

सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग से संबंधी गिरते ग्राफ का एक बहुत बड़ा कारण हिन्दी के प्रयोग को लेकर 'बहानेबाजी' है। 'बहानेबाजी' अर्थात् कुछ गलतियों के बचाव में या किसी दायित्व को पूर्ण न करने के कारण के रूप में दिए गए 'स्पष्टीकरण' या काम को टालने की मंशा से दिए जाने वाला 'वक्तव्य'।

यह चित-परिचित मनोस्थिति हमारे सरकारी कार्यालयों में बहुतायत में पाई जाती है। ''मैं तो एक व्यस्त अधिकारी /कर्मचारी हूँ, अति महत्वपूर्ण कुर्सी पर बैठा हूँ, यदि आवश्यक दबाव हुआ तो 'हिन्दी संस्करण अलग से प्रेषित किया जाएगा''- जैसी टिप्पणी से काम चला लूँगा। हिन्दी का अच्छा ज्ञान रखने वाले कार्मिक भी अपने पद की व्यस्तता, गोपनीयता, कार्यों में होने वाले विलंब जैसे 'वक्तव्य' देकर हिन्दी के प्रयोग से बचते दिख जाते हैं। संभवत: इस तरह के लोगों को जापान, जर्मनी एवं रूस का उदाहरण देने की आवश्यकता है। जापानी, जर्मन एवं रूस में यदि किसी विदेशी को काम करना है तो उनकी भाषा आवश्यक रूप से सीखनी होती है, चाहे वह किसी भी प्रकृति का कार्य क्यों न हो। मेरे समक्ष इन देशों के उदाहरण हैं, जिसमें विदेशी मेडिकल छात्रों को, विदेशी अनुसंधान अधिकारियों को आवश्यक रूप से उनकी भाषा सीखनी होती है। वे यदि अपने देश से बाहर भी जाते है तो शायद ही कभी अंग्रेजी बोलते हैं। उन्हे अपने देश की राष्ट्रभाषा, सरकारी भाषा पर गर्व है, तो फिर हम क्यों अपनी राजभाषा का प्रयोग अपने काम में लाने पर बहानेबाजी का सहारा लेते हैं, संभवत: अधिकारियों में ऐसी भावना भी होती होगी कि हम एक ही बात को दो बार क्यों लिखें, जबकि वे भली भांति जानते हैं कि नियम के अनुसार किसी भी अधिकारी से उसके फ़ाइल में अंग्रेजी में किए गए कार्य को हिन्दी में नहीं मांगा जाएगा और उसके द्वारा फाइल में हिन्दी में किए गए कार्य को अंग्रेजी में नहीं मांगा जाएगा- तो बस इस बात की आड़ में बहानेबाजी तो बनती है कि हिन्दी में काम क्यों करूँ। कार्मिकों का अंग्रेजी के प्रति लगाव और हिन्दी को दोयम दृष्टि से देखना ही इसे पीछे ले जा रहा है।

अब बात आती है 'अनभिज्ञता' के मुद्दे की। 'अनभिज्ञता' अर्थात् ज्ञान या जानकारियों की कमी। सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर यह धारणा बहुत ही सामान्य है। नवनियुक्त अधिकारियों से लेकर वर्षों तक सरकारी सेवा करने वाले अधिकारीगण उनके सरकारी उत्तरदायित्व को निभाने के साथ-साथ ही राजभाषा प्रावधानों के प्रयोग को शामिल करने पर अपनी अनभिज्ञता व्यक्त करते हैं। जब इस विषय पर उनसे बात की जाती है कि आप हिन्दी में काम नहीं कर रहे तो वे बड़ी ही उदासीनता के साथ कहते हैं कि ये तो हिन्दी विभाग का काम है। मैं अपने कार्यालय की बात करता हूँ, 'सीमाशुल्क अधिनियम 1962' के अंतर्गत काम करने वाले कुल राजपत्रित एवं अराजपत्रित अधिकारियों की संख्या लगभग 1250 हैं तो वहीं 'राजभाषा अधिनियम 1963' के प्रावधानों को लागू करवाने के लिए सिर्फ 02 अधिकारी। क्या यह संभव है कि उक्त अधिकारियों द्वारा उस 'नकली अनभिज्ञता' के चलते क्या राजभाषा अधिकारी अपनी सेवाओं को सबको दे सकता है? वे यह महसूस ही नहीं करते कि उनके राजभाषा रोस्टर के हिसाब से विभाग के पास उनकी हिन्दी की शैक्षणिकता दर्ज होती है और उनको समय-समय पर निर्देश भी दिए जाते है कि राजभाषा प्रावधानों का उल्लंघन न करे, यदि उनके पास कार्यसाधक ज्ञान या प्रवीणता प्राप्त है तो उनके द्वारा सरकारी काम-काज हिन्दी में किया जाना है। पर चाहे राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले प्रावधान हों या राजभाषा नियम 1976 की नियमावली, अधिकारीगण अपनी अनभिज्ञता प्रदर्शित करते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या किया जाना चाहिए। एक बात तो स्पष्ट कर लीजिए कि राजभाषा प्रावधान सभी के लिए आवश्यक हैं और हिन्दी का ज्ञान रखने वाले प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित सभी अधिकारियों को इसके प्रति ज्यादा संवेदनशील होना होगा अन्यथा गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग कठोर निर्णयों से दो चार होना होगा। जी हाँ, ये इशारा संसदीय राजभाषा उप समिति के निरीक्षण दौरे का है। भ्रांतियाँ, बहाने, अनभिज्ञता' से परे अपने अपने विभाग में सर्वप्रथम 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाना चाहिए। उनमें कार्यालय अध्यक्ष के साथ-साथ सभी अनुभाग प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्य हो। आवश्यक रूप से प्रत्येक तिमाही की बैठक में सभी

की सहभागिता सुनिश्चित करवानी होगी। अनुभाग प्रमुखों द्वारा एक बहुत ही अटपटा प्रश्न बार-बार पूछा जाता है कि 'हम ही क्यों'? इसका जवाब है कि उन सभी अनुभाग प्रमुखों को राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना है और सभी अनुभाग अधिकारी अपने अधीन कार्मिकों से उन प्रावधानों को लागू करवाएगा। इसके पीछे यह भावना होती है कि अनुभाग के सभी कार्मिक राजभाषा के प्रति संवेदनशील हो जाएं।

यह एक साझा प्रयास है, जिसमें हमें सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग करने में होने वाली झिझक को दूर करके इस उद्देश्य के लिए अपने कनिष्ठों को तैयार करना है, राजभाषा कार्यशालाओं में नियमित भागीदारी सुनिश्चित करनी हैं एवं सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रयोग को एक शासकीय गौरव की मान्यता देना है। इसके प्रयोग से बचने के बहाने, अनभिज्ञता और भ्रांतियाँ बस एक कृत्रिम तात्कालिक मान्यताएं हैं, दीर्घकालिक व्यवस्था हेतु हमें पूर्ण आत्मविश्वास और गर्व से इसे सरकारी काम काज में इतना प्रयोग में लाना होना जहां पर यह हमें सरल, स्पष्ट लगने लगे और हम नेमी रूप से इसका प्रयोग कर सकें।

❖❖❖

काव्यधारा

कल का डर

नींद बंद कर शीशी में
खुली आँख पर ख़्वाब धरे हैं।
सपनों के गुब्बारों में हमने
फूँक-फूँक कर 'आज' भरे हैं।

चारकोल की काली सड़कों से भी गाढ़ा
कल का डर
उस पर भी इन राहों पर सब
कितना नंगे पांव चले हैं।

मन में जितना वेग भरा हो
कदमों में उतनी चंचलता बढ़ती है।
पैरों की आपाधापी कहती है
किसमे कितने जख्म भरे हैं।

कोमल मन

जब कोमल मन कोमल काया
पर कठोर कुटिल प्रहार हुए।
तब अबला ने व्यथित हृदय से
अपनों से तकरार किए।

✍ **अजित कुमार, कर सहायक**

आखिर उसकी पीड़ा भी तो
पीड़ा ही होती है ना.....
आखिर उसकी इच्छा भी तो
इच्छा ही होती है ना.....

जब उसके निज अरमानों पर
अपनों ने सौ तंज कसे
तब उसके कंपते कदमों ने
घर के चौखट लांघ दिए।

आखिर उसको मर्यादा का
किंचित भान नहीं है क्या.....
घर आँगन महकाने पर भी
घर से प्यार नहीं है क्या.....
माना कि उसपर सारे
इल्जाम सही हो सकते हैं
पर सोचो तो उसकी भी
जज्बात सही हो सकते हैं।

हिन्दी पखवाड़ा - 2021 के अंतर्गत आयोजित राजभाषा शपथ ग्रहण, पुरस्कार वितरण, विभागीय पत्रिका शेवा कृति के तृतीय अंक का विमोचन समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि व अन्य अधिकारीगण

विभागीय बस से कार्यालय आने का अनुभव

✍ संजय कुमार, अधीक्षक

बात उन दिनों की है जब मेरी तैनाती मुंबई शहर से लगभग 55 किलोमीटर दूर न्हावा शेवा गाँव में निर्मित जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन कार्यालय में हुई थी तो सबसे बड़ी चुनौती थी मुंबई शहर के दादर, माटुंगा जैसे व्यस्त इलाके में आवंटित शासकीय आवास से कार्यालय पहुँचना, जो कि शहर से गाँव जाने जैसी बात थी और वो भी दोतरफा सफर। रास्ते में नदी, पहाड़ जैसा दिखने के आसार भी बहुत कम क्योंकि आप एक महानगर से चिपके हुए क्षेत्र के धूल भरे विकास को भी देखते चलते हैं और चूंकि मुझे शहरी क्षेत्र फाइव गार्डन्स के कस्टम्स क्वार्टर्स में आवंटित हुआ था, जिसे मेरे एक परिचित अधिकारी जन्नत के नाम से भी पुकारते थे, मेरे एक अभिन्न मित्र तो फाइव गार्डेन को बारिश के मौसम में एम्सटर्डम कहते हैं। वैसे तो अन्य अधिकारी अपने विभिन्न वाहनों से, बोट-नौकाओं और बस इत्यादि से भी आना-जाना करते हैं किन्तु मुझे और भी अधिक सुविधाजनक सवारी की तलाश थी। मैंने गेट वे ऑफ इंडिया से जेएनपीटी तक चलने वाली पोर्ट ट्रस्ट द्वारा संचालित नौका सेवा से आने जाने के प्रथम प्रयास भी किए जिसमें बोट से आगे की यात्रा भी पोर्ट ट्रस्ट द्वारा संचालित बस में करनी पड़ती है। शुरू के एक दो दिन इस अनुभव में गुजर गए। गर्मी का मौसम था, समंदर भी उबासियाँ लेते हुए साथ डोलता रहता था। हम भी सो जाया करते थे आध घंटे भर के लिए। बोट बीच समंदर में रोक भी दी जाती थी, जब कोई बड़ा मालवाहक जहाज गुजरता था या जब किसी गश्ती दल से सामना हो जाता था, सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नौसेना का पश्चिमी कमान का मुख्यालय भी पास ही है तो नौ सेना के जंगी जहाजों और पनडुब्बियों के दर्शन भी कभी-कभी हो जाया करते थे। इसी बीच सौभाग्य से मुझे विभागीय बस सेवा के बारे में जानकारी मिली जो मेरे निवास फाइव गार्डन से आरंभ होकर कुल जमा डेढ़ दो घंटों में कार्यालय तक का सफर पूरा करती थी। बीच रास्ते में अन्य अधिकारियों को चढ़ाती, उतारती ये बस मुंबई के अंटॉप हिल, चेम्बूर, मानखुर्द और नवी मुंबई के वाशी, जुईनगर, बेलापुर और एकता विहार जैसे रिहायशी क्षेत्रों से चलते रुकते न्हावा शेवा कार्यालय तक पहुँचती है। कमाल की बात ये है कि वापसी के सफर में यही बस हमें उसी रास्ते से घर तक ले जाती है।

सुबह 7-8 बजे से ही मोबाइल ये बताने लगता है कि आज बस में कौन आ रहा है और कौन नहीं, इसके आधार पर ये भी तय होता है कि कार्यालय पहुँचने का मार्ग कौन-सा तय किया जाएगा। बस सुबह 9 बजे हमारे आवास फाइव गार्डन्स से ही चलती थी, जो अधिकारी बस से सफर करते थे उनका एक व्हाट्सएप ग्रुप बना हुआ था। व्हाट्सएप ग्रुप का यहाँ पर प्रयोग अनोखे तरीके से होता था। बस के सफर शुरू होते ही हमारे ग्रुप में ये संदेश आ जाता था कि बस फाइव गार्डन्स से खुल चुकी है ताकि अगले स्टॉप पर चढ़ने वाले अधिकारी तैयार रहे। कुछ दिनों के सफर के बाद ये मेरा ही जिम्मा बन गया कि बस के खुलने के संदेश मुझे ही प्रतिदिन सुबह डालने होते थे। मुझसे भी ज्यादा उत्साहित एक और अधिकारी हैं, जो मेरी सूचना पर तत्काल ही 'आइये, स्वागत है' का संदेश चिपका दिया करते थे, कहने का मतलब वे शायद ये दर्शाना चाहते थे कि मैं आगे पहले से ही खड़ा हूँ, समय का पाबंद हूँ। किसी दिन उन्हें समय से बस आरंभ होने का संदेश प्राप्त नहीं होता था तो वे पूछ लेते थे कि स्वागत किसका करें? अगले स्टॉप हनुमान मंदिर तिराहे से ऊंची नीची पहाड़ी पॉश बस्तियों से गुजरती हुई एकदम से कस्बाई माहौल में घुस जाती है, ये इलाका है अंटॉप हिल का, स्वागतोत्सुक अधिकारी इसी स्टॉप से चढ़ते थे। बस के

सहयात्री समय पर तत्पर रहते थे कि बस छूट न जाये। व्हाट्सएप ग्रुप में बस की लाइव लोकेशन अगले एक घंटे के लिए डाल दी जाती थी, जिससे आगे के बस यात्री समय से बस ले सकें। इस तरह सभी सहयात्रियों को उनके स्थान से लेते हुए लगभग डेढ़ घंटे में बस ऑफिस पहुँचती थी।

वापसी के लिए बस के मजेदार नियम राजभाषा विभाग अधिकारी द्वारा बनाये गए थे, जैसे शाम को सभी को 6 बजकर 5 मिनट तक बस में पहुँचना होता था, जिनको देर होने वाली है उन्हें ग्रुप में विलंब का संदेश देना होता था। वैसे तो सभी लोग समय पर पहुँच जाते थे पर देर से आने वालो के लिए एक उपाय निकाला गया। वो उपाय यह था कि जो भी बस में 6 बजकर 10 मिनट के बाद आएंगे उन्हें सभी लोगों को समोसे और मिठाई खिलाना होगा। हमें सबसे जुर्माना वसूलने की पुरानी आदत जो है, इससे देर आने वाले अधिकारी को समय पर पहुँचने की चुनौती रहती थी और समय पर पहुँचने वाले लोग ये इंतज़ार करते थे अगली पार्टी किससे मिलेगी। ऐसी पार्टियों के बाद सारे यात्री दिन भर की थकावट भूल तरोताजा अनुभव करने लगते थे और बस का सफर और भी मनोरंजक हो जाता था और जब तक अंतिम यात्री भी बस के अंदर नही आ जाता तब तक बस में सवार यात्री कभी समय देखते, कभी खिड़की से बाहर देखते, जैसे कह रहे हों कब आओगे? कब आओगे? ऑफिस से बस निकल जाएगी क्या तब आओगे? और संबंधित अधिकारी इस भाव के साथ बस में चढ़ते थे जैसे– ''मैं देर करता नहीं देर हो जाती है।''

बस के किराये की रकम भी सफर करने वाले लोगो की संख्या पर निर्भर होती थी। हर महीने ये डर होता था कि कोई बस का सफर बंद तो नहीं कर रहा है और बस में कोई नया यात्री जुड़ने से थोड़ी राहत होती थी क्यूंकि ये संख्या ऊपर नीचे होती रहती थी। बस में सफर के दौरान त्यौहार, जन्मदिन या विशेष आयोजन के दिन बस में मिठाई का वितरण किया जाता था, ये काम महिला अधिकारियों के द्वारा किया जाता था। बस की महिला यात्रियों में गजब की सहयोग भावना थी, महिला यात्री बस से फोन के द्वारा वाशी, बेलापुर और एकता विहार के महिला सहयात्री को बस के पहुँचने की अनुमानित समय से अवगत करा देती थी। यह उनके वर्षों के अनुभव का ही सूचक था क्योंकि मुंबई सीमाशुल्क का दायरा तीन बड़े–बड़े अंचलों तक फैला हुआ है और सभी कार्यालयों में हजारों की संख्या में अधिकारी कर्मचारी इसी सहयोग की भावना से आना–जाना कर रहे हैं बस उनके माध्यम अलग–अलग होते हैं।

बस से सफर में सबसे ज्यादा मनोरंजक माहौल तब होता था जब बस का ड्राइवर बदलता था, हर महीने किसी न किसी कारणवश ड्राइवर बदल जाते थे, नए ड्राइवर को लंबे घुमावदार और निर्माणाधीन रास्ते की पूरी जानकारी नहीं होती थी। कई बार नए ड्राइवर के कारण बस रास्ते से भटक जाती थी और हम कार्यालय देर से पहुँचते थे, बस में बैठे यात्री नींद में या अपने मोबाइल में घुसे होते थे और बस किसी और रास्ते में चल रही होती थी। इस तरह सो गए तो खो गए वाला मामला बन जाता था, पर बाद में नए ड्राइवर के दिन सभी लोग सावधान रहने लगे, ड्राइवर को सही दिशा निर्देश हर अंतराल पर लगातार देते रहते थे कि कौन सा ओवरब्रिज लेना है या नहीं लेना है, कहाँ पर बस को रोकना है, नहीं रोकना है। बस के आगे की कतार में बैठे लोगो की यह जिम्मेदारी ज्यादा होती थी पर ये जिम्मेदारी मिल के सभी लोग निभाते थे। आगे बैठने वाला कम ही सो पाता था। जब हम खो जाते थे तो पर्यटन जैसी फीलिंग आने लगती थी, नए इलाके देखने मिलते थे। खिड़की वाली सीट पर बैठ के मनोरम प्रकृति के आनंद लेते हुए हम सभी शहर से गाँव की तरफ होते हुए न्हावा शेवा पहुँचते हैं। सामान्यतः लोग गाँव से शहर की तरफ नौकरी के लिए जाते है पर हम शहर से गाँव की तरफ जाते हैं।

बस में सफर के अब लगभग साल भर पूरे हो रहे हैं और मेरे अनुभव बहुत ही मजेदार और अनोखे रहे हैं, इस एक वर्ष में मैंने मुंबई के सभी मौसम भी देखे हैं, जब इस अनुभव को दर्ज करने का विचार मन में आया तब मुंबई अपने अगले मानसून से निपटने की तैयारी कर रहा था और अब तो झमाझम बारिश अपने पूरे रौद्र रूप में दिखा रही है, बारिश के मौसम में बस यात्रा के अनुभव कुछ दूसरी शक्ल ले लेते हैं जिन्हें आपके साथ फिर कभी साझा करूंगा। बस में सफर के दौरान मेरे कई नए मित्र बने और ये सफर हमारे जीवन का यादगार अनुभव में से एक अलग अनुभव रहा है।

❖❖❖

योग दिवस - 2022 में योग आसन करते हुए सीमाशुल्क अधिकारीगण

✍ अनामिका शर्मा, अधीक्षक

आपली लेक

स्वभावाने great असते
प्रेमाचे net असते
सुखाचे gate असते
लेक ही लेकच असते..
भावाशी close असते
बापाची rose असते
आईची pose असते
अभिमानाचे हदो असते
लेक ही लेकच असते..
जगण्यातील shift असते
ईश्वराची gift असते
सुखाची lift असते
लेक ही लेकच असते..
घराण्याची fame असते
भविष्यातील dame असते
तुमची आमची same असते
लेक ही लेकच असते!!
- Family मधील सर्व लेकींसाठी.
तुळशीचं रोप म्हणजे मुलगी आणि
मुलगी म्हणजेच महालक्ष्मी

दारा समोर अंगणा मधे
सुबक रांगोळी दिसावी...
प्रत्येक घरात कमीतकमी
एक तरी मुलगी असावी...

मुलगी म्हणजे घरासाठी
जीव की प्राण..,
तिला पाहून हरपून जातं
सारं देहभान...
मुलगी घरात असली म्हणजे घर कसं फुलून जातं...
तिचं असणं घरासाठी
चंदनाचा लेप होतं...

का बरं तिचेच नाव तोंडी असतं
चोवीस तास येते ओठी...
त्याग, प्रेम, माया, काळजी
शब्द फक्त तिच्यासाठी...

आज सुकल्या सारखे दिसता
बाबा काही दुखतंय का?
असा प्रश्न मुलगीच विचारते
काळजात काही टोचतय का?

आई वडिलांचं मन वाचण्याची भाषा
कुठून शिकते ती?
सारं दुःख कुशीत घेऊन
इतरांसाठीच जगते ती?

मुलगी करते चिवचिवाट
म्हणून घर फुलून येतं...
असो अथवा नसो काही
मन कसं भरून जातं...

आई-बाबांच्या म्हातारपणी
मुलगीच होते त्यांची आई...
घर कितीही मोठं असो
'मुली' शिवाय श्रीमंती नाही...

मुलीसाठी देवा समोर
हात जोडून बसलं पाहिजे...
प्रत्येकाच्या अंगणा मधे
'तुळशीचं रोप' असलं पाहिजे.....
मातापित्याच्या लाडक्या लेकींसाठी...

❖❖❖

लेख

सेवा-निवृत्ती शाप की वरदान!

✍ मानसी चव्हाण, अधीक्षक

प्रत्येकाने वाचावी:

हृदय पिळवटून टाकणारी कथा .. रिटायर्ड माणूस

जगात सर्वात लक्ष न देण्याजोगा प्राणी म्हणजे रिटायर्ड माणूस! ठरल्याप्रमाणे, म्हणजे अगदी सटवाईनं लिहून ठेवल्याप्रमाणे 58/60 व्या वर्षी तो रिटायर्ड झाला आणि त्याचं जगच बदललं.

नोकरीत असतांना त्याची एक ठराविक दिनचर्या होती. सकाळी साडे नऊला तो घराबाहेर पडायचा. अत्यंत प्रामाणिकपणे ऑफिसच्या वेळांत नेमून दिलेलं काम आटपायचा. भाजी, किराणा सामान घेत, भेटलेल्या कुणाशी चर्चा करून रमत गमत घरी परतायला त्याला संध्याकाळचे सात वाजत आल्यावर जेवण, शतपावली वगैरे झालं की पलंगावर पडल्या बरोबर त्याचे डोळे मिटायला लागत.

तो रिटायर्ड होऊन आरामाचं आयुष्य जगतोय आणि आपल्याला मरेपर्यंत रिटायर्ड होता येणार नाही, ही जाणीव तिला बोचत असावी. खरं तर तिचंही वय उताराला लागलं होतं आणि व्याप वाढत असल्याने तिची आता दमछाक होऊ लागली होती.

ऑफिसात सगळा स्टाफ त्याच्या वर खुश असायचा. त्याचा हसरा चेहरा बघायची संवय झालेले त्याचे सहकारी त्याच्या रिटायर्डमेंटच्या सभारंभाला खूप हळहळले, पण सरकारी नियमांपुढे सर्वांचाच नाईलाज होता.

एरवी त्याचे दिवसभराचे कार्यक्रम इतके साचेबध्द होते की, सुटीच्या दिवशी घरांत त्याचा जीव घाबरायला लागायचा. दुपार खायला उठायची आणि करायला काहीच नाही म्हटल्यावर त्याचे पाय बायकोच्या हक्काच्या स्वैंपाकघराकडे वळायचे.

मग ही बरणी उघड, तो डबा उचक, असे त्याचे उद्योग दुपारभर चालायचे. वामकुक्षी आटोपून बायको उठली की तिला विस्कटलेलं स्वयंपाकघर दिसे आणि तिचा संताप होई.

सुटीचा एक दिवसही हा माणूस घरांत नको, असं तिला वाटायला लागे. त्यालाही अपराध्यासारखं होत असे, जितके व्यवस्थित आपण ऑफिसात असतो. तेवढं घरी रहाणं जमत नाही, ही खंत त्याला पुढील आठवडाभर त्रास देई. रिटायर्ड झाल्यापासून तो कायम घरांतच असायचा. तिला मात्र याचा त्रास व्हायचा. तिच्या हौशीचे दिवस कधीच सारून गेले होते आणि जेंव्हा हौस करायची वेळ होती, तेंव्हा हा सतत ऑफिसचं तुणतुणं वाजवायचा, हे ती विसरली नव्हती, किंबहुना तिच्या मनांत याचा सुप्तसा रागही असावा. गरजेपुरता पैसा घरांत येत असला की माणसांचं ओझं व्हायला लागतं.

वर्षानुवर्षाच्या त्याच्या संवयी तिला आता त्रासदायक होऊ लागल्या, त्याच्याबद्दलच्या तिच्या तक्रारी वाढू लागल्या. त्याने स्नान केल्यावर ओला टॉवेल पलंगावर फेकायची त्याला सवय होती, तो ऑफिसात जायचा तेंव्हा ती कर्तव्य म्हणून तो ओला टॉवेल उचलून धुवायला घेत असे, पण आता त्याला 'भरपूर वेळ असल्यानं असली कामं त्यानेच आपणहून करायला हवीत' असा तिचा आग्रह होता.

हा आग्रह त्याला मान्यही होता, मात्र तिने सूचना चांगल्या शब्दांत द्याव्या, असा त्याचा सूर होता. तिच्या स्वभावामुळे कदाचित, तिला त्याची ही गोड बोलण्याची अपेक्षा पूर्ण करणं जमत नव्हतं.

तो रिटायर्ड होऊन आरामाचं आयुष्य जगतोय आणि आपल्याला मरेपर्यंत रिटायर्ड होता येणार नाही, ही जाणीव तिला बोचत असावी. खरं तर तिचंही वय

उताराला लागलं होतं आणि व्याप वाढत असल्याने तिची आता दमछाक होऊ लागली होती.

मुलांची लग्न, सुनेशी जमवून घेतांना होत असलेली तारांबळ, तो घरीच असल्याने त्याचेकडे येणारी माणसं, आणि हे कमी का काय म्हणून चोवीस तास समोर वावरत असलेला, पण घरकामाला काडीचा हातभार न लावणारा तीचा हा स्थितप्रज्ञ नवरा.

तो समोर नसला की, त्याच्याबद्दलच्या असूयेनं आणि समोर असला की त्याचं तोंड बघूनच तिचं रक्त उसळायला लागायचं.

तो पाणी प्यायला जरी स्वैंपाकघरात शिरला तरी 'तू मुद्दाम माझ्या मध्ये मध्ये लुडबुड करतोस' म्हणत ती त्याला झिडकारायची.

हळूहळू तिला तो डोळ्यासमोरही नकोसा होऊ लागला. आणि त्या दिवशी ती प्रचंड चिडली.

कारण काय होतं कुणालाच कळलं नाही, तिलाही. पण इतक्या दिवसांचा मनांत साचलेल्या रागाचा स्फोट झाला आणि तिने त्याच्यावर खूप आरडा ओरडा केला. त्याला अद्वा तद्वा बोलली, थेट त्याच्या आई वडिलांचा, बहीण भावांचा उद्धार केला. तो हादरला, पण रिॲक्ट करण्याचा त्याचा स्वभाव नव्हता.

तो तिला चिडायची कारणं विचारत राहिला. आणि ती प्रत्येक वेळी सांगत राहिली, 'तू मला आता डोळ्यासमोर नकोस, बस! त्याने ऐकलं आणि निराश होत विचारलं!

'आयुष्याच्या या स्टेजवर आता मी कुठे जाऊ?' तिला वाटलं हा चिडवतोय, ती मग आणखीनच चिडली.

हातवारे करत किंचाळली! 'कुठेही जा. मेलास तर फारच बरं होईल, माझी सुटका तरी होईल.'

हे ऐकून हा एकदमच शांत झाला. तश्याही परिस्थितीत म्हणाला, 'ते माझ्या हातात नाही, पण तुझा शाप माझ्या आतपर्यंत पोहोचला. तू मात्र खूप जग, माझं उरलेलं आयुष्य तुला मिळू दे. शतायुषी हो! हे असं वारंवार होऊ लागलं. अगदी चिमुटभर कारणा साठीही ती त्याला मरणाचा शाप द्यायची आणि मोबदल्यात तो तिला शतायुषी होण्याचा आशीर्वाद द्यायचा. तिच्या मनांत तसं काही नसायचं. त्याने खरंच त्यांच्या संसारातून, या जगातून कायमचं निघून जावं असं तिला वाटणं शक्यच नव्हतं.

शेवटी तिनेही त्याचेबरोबर पस्तीस छत्तीस वर्ष संसार केला होता, त्याने बांधलेलं मंगळसूत्र तिने सन्मानाने मिरवलं होतं, वर्षानुवर्षे त्याचं आयुष्य वाढावं म्हणून वड पुजले होते, हरताळकेचे कडकडीत उपास घातले होते, त्याचा मृत्यू मागण्या इतकी ती खचितच दुष्ट नव्हती.

पण तिच्यासमोरचा त्याचा सतत होणारा वावर जाणवला की तिची विचार शक्ती संपूर्णपणे नष्ट व्हायची, मेंदू अक्षरशः पेट घ्यायचा आणि तिच्या तोंडातून नको ते शब्द बाहेर पडायचे आणि एक दिवस अचानकच तो गेला.

'देवा, उचल मला' म्हणून प्रार्थना करायची. 'भोग भोगायला मला एकटीला अश्या परिस्थितीत सोडून तो सुखासुखी निघून गेला' म्हणत मनातल्या मनांत त्याला दुषणं देत पडून रहायची. फारसं आठवायचं नाही तिला काही आज काल. मात्र तिने दिलेले शाप आणि त्याने दिलेले आशीर्वाद, प्रयत्क करूनही तिच्या स्मृतीतून निघत नव्हते....!

सकाळी उठून त्याने चहा घेतला, लांब फिरून आला आणि 'थकवा वाटतोय' म्हणत सोफ्यावर आडवा झाला तो उठलाच नाही.

घरांत धावपळ झाली,
डॉक्टर आले,
त्यांनी तपासलं
आणि
त्यांच्या प्रथेनुसार
इंग्रजीत
'सॉरी, ही इज नो मोअर' सांगितलं.
एकच हलकल्लोळ झाला.
तो मात्र त्याच्या स्वभावा प्रमाणेच एकदम शांत

पहुडला होता.

प्रत्येकजण त्याच्या वेदनारहित मृत्यूचा हेवा करीत होते.

Before Time असं मरण नको होतं ,असा प्रत्येकाचाच सूर होता.

तिच्यासाठी मात्र लोक खूपच हळहळले 'आता कुठे सुखाचे दिवस आले होते, नवऱ्याचा पूर्णकाळ सहवास लाभला होता, तर ही वेळ आली' असे लोक म्हणत होते.

आकाशाकडे बोट दाखवून, 'त्याच्या इच्छेपुढे कुणाचं काय चालतयं का? वगैरे बोलून तिचं औपचारिक सांत्वन करून लोक त्यांच्या निघून गेले.

आता ती एकटी राहिली. प्रेम, राग, विरोध, काळजी या मनातील भावना व्यक्त करायला हक्काचं कुणी उरलं नाही.

तसं मुलं, सुना लक्ष द्यायचे तिच्याकडे, पण त्यांना त्यांचाही संसार होता.

तिनं देवळं धुंडाळली, मित्र मैत्रिणी झाले, काही काळ माहेरच्यांचं कौतुक झालं, मग मात्र सारेच आपोआप दूर झाले.

असेच दिवस जाऊ लागले, महिने गेले, वर्षे सरली. मुलांनी थाटात तिचा पंच्याहत्तरावा वाढदिवस साजरा केला. पण 'सतत तुझंच कौतुक कसं करायचं?'

म्हणत मग त्यांनीही अंतर राखायला सुरुवात केली.

नातू, नात लहान होते तोवर तिचे होते,

मोठे झाल्यावर त्यांचं जग विस्तारलं,

आजीचा पदरही न सोडणारी बाळं तिनं चारदा आवाज दिल्यानंतर एकदाच 'काय आहे आजी?'

असं चिडक्या स्वरांत विचारू लागले.

तिला हे त्रासदायक व्हायचं, नेमका तेंव्हाच, नवऱ्याशी केलेला व्यवहार आठवायचा, पण 'काळाला मागे नेऊन चूक सुधारता येत नाही' हे ठाऊक असल्याने, तिला नेमून दिलेल्या जागी पडलेला चेहरा घेऊन ती बसून रहायची.

तिच्या वयाचा आकडा वरवर जात राहिला, कार्यक्षमता मात्र दर दिवसाला कमी होत गेली.

आता मात्र ती प्रचंड थकली, हातपाय चालणं कठीण झालं, वेळ काढणं जड जाऊ लागलं.

'तुझी उपयोगिता संपायला आलीय' याची जाणीव लोक आडून पाडून तीला करून देऊ लागले आणि नकळत ती मरणाची वाट बघायला लागली.

एव्हाना पन्नाशी ओलांडलेले मुलगा आणि सूनही थकायला लागले होते. त्यांनाही त्यांचे जावई सुना आल्या होत्या आणि नवी सून तिच्याच सासूचं काही करेना, तिच्याकडून आजेसासू साठी काही अपेक्षा करणं तर फारच कठीण होतं. ती रोज आतल्या आत रडायची.

'देवा, उचल मला' म्हणून प्रार्थना करायची. 'भोग भोगायला मला एकटीला अश्या परिस्थितीत सोडून तो सुखासुखी निघून गेला' म्हणत मनातल्या मनांत त्याला दुषणं देत पडून रहायची. फारसं आठवायचं नाही तिला काही आज काल. मात्र तिने दिलेले शाप आणि त्याने दिलेले आशीर्वाद, प्रयत्क करूनही तिच्या स्मृतीतून निघत नव्हते....!

'मेलास तर फारच बरं होईल, माझी सुटका होईल.' हा तिनं त्याला दिलेला शाप होता की आशीर्वाद होता!

'तू मात्र खूप जग, शतायुषी हो,' हा त्याने तिला दिलेला आशीर्वाद होता का शाप होता की आशीर्वाद? हे मात्र तिला तिचंच कळत नव्हतं....

मित्रांनो!

आपलेही

बरेच मित्र सेवेतून निवृत्त झाले आहेत व काही निवृत्ती'च्या उबंरठ्यावर आहेत. एकमेकांना खूप जीव लावा आणि उर्वरित आयुष्य सुखाने जगा.

सदरचा लेख कुणी लिहिला, माहित नाही.

मात्र लेखकाने लिहीलेले प्रसंग कुणाच्या तरी आयुष्यात घडून गेलेले असावेत, असे जरी ग्रहित धरले तरी देखील, सदरची घटना सहजासहजी मान्य करावयास कुणाचेही मन तयार होणार नाही हे निश्चित.

मात्र

अशाही घटना कुणाच्या आयुष्यात सेवा निवृत्ती नंतर जर घडत असेल, तर हे फारच भयानक व हृदयद्रावक चित्र आहे. जगात सर्वात लक्ष न देण्याजोगा प्राणी म्हणजे रिटायर्ड माणूस'

हा लेख रिटायर्ड व्यक्तींनी जरुर-जरुर वाचावा.

❖❖❖

मराठी बोध कथा

रे स्टॉरंटमध्ये एक व्यक्ती येऊन गर्दीचा फायदा घेत गुपचूप पैसे न देता निघून गेल्याचे मी अनेकदा पाहिले आहे... एके दिवशी तो जेवत असताना मी गुपचूप नाश्त्याच्या दुकानाच्या मालकाला सांगितले की हा भाऊ गर्दीचा फायदा घेऊन बिल न भरता निघून जाईल.

माझे ऐकून रेस्टॉरंटचा मालक हसत हसत म्हणाला– काही न बोलता त्याला जाऊ द्या, त्यावर नंतर बोलू. नेहमीप्रमाणे नाश्ता करून भावाने आजूबाजूला पाहिलं आणि गर्दीचा फायदा घेत गपचूप तिथून निघून गेला. तो गेल्यानंतर, मी आता ब्रेकफास्ट पॉइंटच्या मालकाला विचारले की त्याने त्या माणसाला का जाऊ दिले ते मला सांगा.

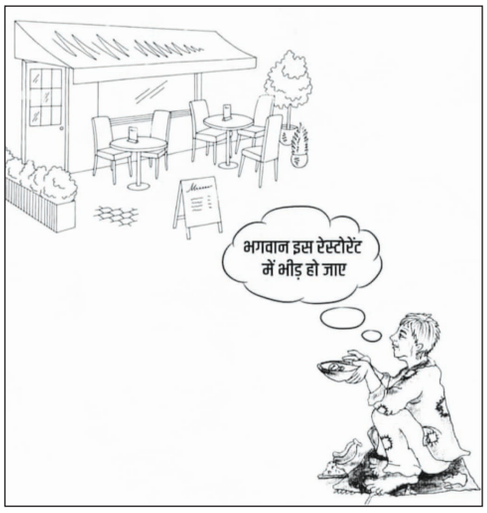

रेस्टॉरंटच्या मालकाने दिले उत्तर–

तो मला म्हणाला– तू एकटा नाहीस, अनेक भावांनी त्याला पाहिले आहे आणि मला त्याच्याबद्दल सांगितले आहे.

तो म्हणाला की तो दुकानासमोर बसतो आणि गर्दी असल्याचे पाहून गुपचूप जेवण करतो. मी नेहमी त्याकडे दुर्लक्ष केले आणि त्याला कधीही थांबवले नाही, त्याला कधीही पकडले नाही आणि कधीही त्याचा अपमान करण्याचा प्रयत्न केला नाही.. कारण माझ्या दुकानातली गर्दी या भावाच्या प्रार्थनेमुळे आहे असे मला वाटते.

माझ्या दुकानासमोर बसून तो प्रार्थना करतो की या दुकानात लवकर गर्दी झाली तर मी पटकन आत जाऊ शकेन, जेवू शकेन आणि निघून जाईन..... आणि अर्थात जेव्हा तो आत येतो तेव्हा नेहमीच गर्दी असते.

तर ही गर्दी बहुधा त्याच्या 'दुआ' ची असावी.

कदाचित म्हणूनच असं म्हटलं जातं की मी कोणाला जेवू घालत आहे म्हणून गर्व करू नये...

तुम्ही स्वत: कोणाच्या नशिबाने खात आहात हे तुम्हाला माहीत असायला हवे?

अत्यंत प्रेरणादायी

निराशा आली, की जिराफाचे पिल्लू लक्षात ठेवा

शंभर प्रकारचे अपयश पचवल्यानंतर यशाची गोडी चाखायला मिळते. मात्र त्यासाठी शंभर वेळा पडूनही पुन्हा उभं राहण्याची तयारी, जिद्द मनात असावी लागते. यश मिळवण्यासाठी मेहनत, दृढता, निश्चय पक्के असावे लागतात. एवढे करूनही अपयश आले, तरी निराशा झटकून पुन्हा उभे राहावे लागते. तेवढे जर आपण केले नाही, तर आपण कधीच यशस्वी होऊ शकणार नाही. एका निराशेमुळे शंभर वेळा केलेल्या प्रयत्नांवर पाणी फिरते. म्हणून निराशा आली, की जिराफाचे पिल्लू लक्षात ठेवा.

जिराफ आपल्या पिल्लाला जन्माला घालते, तेव्हा ते पिल्लू दाणकन जमिनीवर आढळते. एका सुरक्षित कवचातून बाहेर येत आपण कुठे येऊन आपटलो, हे उमगायच्या आत त्याला आईची एक लाथ बसते.

आधीच आपण जोरात आपटलो गेलो, त्यात वरून पाठीत जोरात दणका बसला. हे पाहून पिलू बिथरते. जन्मदात्री आई आपल्याला मारायला धावतेय पाहून घाबरते. आई पुन्हा एक लाथ मारायच्या तयारीत अंगावर धाव घेते. कोवळ्या पायाचे पिलू घाबरून उठू लागते. तोवर त्याची आई येऊन त्याला लाथ मारून जाते. पिलाला कळून चुकते. आपण नुसते उभे राहून उपयोग नाही, तर आपण इथून पळ काढला पाहिजे, नाहीतर आपल्याला लाथा खाण्यावाचून पर्याय राहणार नाही. पिलू धावण्याचा प्रयत्न करणार तोच तिसरी लाथ बसते आणि पिलू धावत सुटते. मग त्याचा पाठलाग करत त्याची आई त्याच्या जवळ जाते आणि त्याला गोंजारते, प्रेम करते. आईला माहीत असते, जंगलात एकापेक्षा एक हिंस्त्र प्राणी आहेत. त्यांना नवजात पिलाचे कोवळे मास आवडते. आपण आपल्या पिल्लाचे कुठवर रक्षण करणार? म्हणून ती पिल्लाला जन्मत: स्वावलंबी बनवते. संकट कधीही येईल. उठ...नुसता विचार करू नको, स्वत:च्या पायावर उभा राहा. आपल्याकडे संरक्षणाचे दुसरे माध्यम नाही, म्हणून उभं राहायला शिकताच धावत सूट. आईचा मनोदय पूर्ण होतो. पिलू चपळ बनते. स्वावलंबी बनते आणि स्व संरक्षण शिकते.

या पिलाकडून आपणही हेच शिकायचे, की अपयश आले, तरी उठून उभे राहायचे. दुसरे अपयश येण्याआधी धावत सुटायचे आणि तिसरे अपयश येण्याआधी आपल्या यशाचे शिखर गाठायचे. ही जिद्द आपण बाळगली नाही, तर आपल्यालाही नशिबाच्या लाथा खाव्या लागतील. म्हणून काहीही झालं, तरी निराश होऊ नका. शेवटच्या श्वासापर्यंत प्रयत्न करत राहा. यश मिळेलच!

❖❖❖

हमारी पुरातन शिक्षा व्यवस्था

✍ श्री सुभाष शंकर झा, अधीक्षक

हमारी शिक्षा व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक और प्रासंगिक थी। जिसे त्यागकर हमने पश्चिमी शिक्षा पद्धति को अपनाया और आज समाज इसे भुगत रहा है। हमारे पूर्वजों ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर जोर दिया। हमारे यहां मनुष्य की आयु के पहले चतुर्थांश (शून्य से पच्चीस वर्ष) को ब्रह्मचर्य आश्रम में रखा गया है। इसका मुख्य उद्देश्य 25 वर्षों तक पूर्ण निष्ठा के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ज्ञानार्जन करना था। इसके अनुसार बालकों को एक निश्चित आयु (सात या नौ वर्ष) होने पर उन्हें विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल में जो घर से दूर गुरु का एक आश्रम होता था, वहाँ भेज दिया जाता था। इस अवधि में वे घर नहीं आ सकते थे। गुरु आश्रम में ही वे जीवन में उपयोगी हर प्रकार की शिक्षा का सैद्धांतिक और व्यावहारिक अध्ययन करते थे। जीवन की हर सूक्ष्म संभावनाओं और कठिनाइयों को दूर करने के नए-नए और उन्त तरीके सीखते थे। गुरु आश्रम में समाज के सभी वर्गों के छात्र एक-साथ एक-समान जीवन जीते थे। वहाँ किसी के लिए कोई अलग या विशिष्ट व्यवस्था नहीं की जाती थी। उद्देश्य सिर्फ एक ही, सभी को उनके आगामी जीवन की कठिनाइयों से निपटने के लिए तैयार किया जाए। वहाँ विद्याध्ययन कर रहे सभी छात्रों में समानता का भाव था और सभी को अपनी योग्यता के अनुसार अपनी क्षमता का विकास और प्रदर्शन करने की खुली छूट थी। जैसे आज हम दसवीं कक्षा तक कला, विज्ञान, गणित और भाषा इत्यादि सभी विषयों का अध्ययन करते हैं, ताकि हर छात्र को इन विषयों की एक सतही और न्यूनतम ज्ञान तो होना ही चाहिए। इसके बाद हर छात्र अपनी योग्यता और रुची के आधार पर किसी खास संकाय या विषय का चयन करता है। उसी प्रकार पहले गुरुकुल में भी सभी छात्रों को जीवन की हर विधा का एक सतही और न्यूनतम ज्ञान होता था, जैसे- शास्त्र, शस्त्र, कृषि, आयुर्वेद, नीति, व्यापार इत्यादि। हमारे गुरुकुल की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह था कि समाज को एक नैतिक, शारीरिक, मानसिक तौर पर सशक्त अगली पीढ़ी सौंपी जाए ताकि समाज में नीति और न्याय पर आधारित एक उत्तम और विकसित व्यवस्था कायम रह सके। गुरुकुल में सारे छात्र चाहे वह किसी भी परिवार, समाज, समुदाय, वर्ग, वर्ण या जाति का क्यों ना हो, सबका रहन-सहन, कार्य-संपादन और शिक्षा का अधिकार समान था। किसी भी आधार पर इनमें कोई विभेद नहीं किया जाता था। गुरुकुल का प्रथम कार्य ही यही था कि सबमें समानता का भाव विकसित हो और एक दूसरे के प्रति सम्मान बढ़े। सभी छात्र मिलकर किसी भी कार्य को करें और उसमें एक दूसरे की क्षमता और निपुणता से अवगत भी हों और उससे अपनी कार्यशैली को और बेहतर बनाने का सुअवसर भी प्राप्त हो। वहाँ राजपुत्रों को भी भोजन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि कार्य करना पड़ता था, ताकि उन्हें पता चले कि किसान कितनी मेहनत से अन्न उगाते हैं। भोजन जुटाने के लिए उन्हें आसपास के गाँवों से भीक्षा भी मांगनी पड़ती थी, ताकि उनका अहंकार समाप्त हो जाए और वो ये जाने की प्रजा किस प्रकार अपना जीवन-यापन करती है और आर्थिक विपन्नता के बाद भी कैसे दूसरों के लिए अन्न-दान करती है। वे अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते थे और इस प्रकार वो प्रकृति का सम्मान और संरक्षण दोनों ही करने को बाध्य होते थे। भोजन के लिए भिक्षा मांगना, साधारण वस्त्र पहनना, जमीन पर सोना, अपने सभी कार्य स्वयं करना, अपने और दूसरों की सुविधाओं के लिए प्रकृति का एक सीमा के बाहर दोहन ना करना, ये सारी बातें उन्हें एक अच्छा नागरिक या एक अच्छा राजा बनने में सहायक सिद्ध होती थी और वो अपने जीवन काल में किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते थे। गुरुकुल में उन्हें जीवन की बड़ी से बड़ी विपदा के समय भी अपना धैर्य और साहस ना खोने के लिए तैयार किया जाता था।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में इन बातों का कोई ख्याल नहीं रखा गया है। अच्छे शिक्षकों तक पहुँच, सिर्फ समाज के समृद्ध वर्ग के लोगों का है। हर व्यक्ति को उसके आर्थिक क्षमताओं के आधार पर अपने बच्चों के लिए स्कूल के चयन का अधिकार है। आजकल स्कूल भी अभिभावकों के लिए उनकी प्रतिष्ठा का एक प्रतीक(स्टेटस सिंबल) हो गया है। विद्यालय के चयन का आधार अच्छी शिक्षा के बजाय अपने बच्चों के लिए भौतिक सुख-सुविधा से संपन्न एक दैनिक आशियाना ढूँढ़ना हो गया है। आज की शिक्षा में जीवन के नैतिक मूल्यों की रक्षा और बेहतर सामाजिक तालमेल से ज्यादा भौतिक सुखों की प्राप्ति और आत्म-केंद्रित व्यवस्था पर जोर दिया गया है। हम अपने बच्चों को स्कूल इसलिए नहीं भेजते कि उसके अंदर मानवीय मूल्यों और जीवन के आगामी संघर्ष से निपटने के लिए उचित और अपेक्षित गुणों और क्षमताओं का विकास हो, बल्कि सिर्फ इसलिए भेजते हैं कि वह जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त कर सके। जबकि सुख का संबंध भौतिक वस्तुओं के उपार्जन और उपभोग से कम और मानसिक शांति और संतुष्टि से अधिक है। हम सब का एक ही उद्देश्य रहता है कि कैसे अपने बच्चों को जहां तक संभव हो जीवन के संघर्ष और विभिन्न कठिनाइयों से दूर रख सके। इस तरह हम उस कुम्हार की तरह हो गए हैं जो बर्तन तो बड़ा सुंदर बनाता है और उसे अलग-अलग रंगों और चित्रों से सजाता भी है, परन्तु उसे आग में पकाता नहीं है। जिससे उसका बर्तन सिर्फ सजाने के काम आता है ना कि लोगों की भूख और प्यास बुझाने में। पानी की कुछ बूंदें या एक छोटा सा झटका भी उस कुम्हार कि सारी मेहनत पर पानी फेर देता है, क्योंकि बिना आग में तपाये उस बर्तन की धारक क्षमता और सुगमतापूर्वक परिवहन को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता।

पहले की शिक्षा व्यवस्था चरित्र-निर्माण पर आधारित थी और आज की धनोपार्जन पर। पहले की शिक्षा व्यवस्था से निकले हुए लोग प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन पर आधारित विकास को प्राथमिकता देते थे और आज की शिक्षा व्यवस्था से निकले हुए लोग प्रकृति के दोहन और शोषण पर आधारित विकास को बढ़ावा देते हैं। पहले लोगों की जैसे-जैसे शिक्षा बढ़ती थी, वो अहंकार, स्वार्थ, इत्यादि मानवीय दुर्गुणों से दूर होते जाते थे। आज लोगों की जैसे-जैसे शिक्षा बढ़ती है, उनके अंदर अहंकार, स्वार्थ जैसे मानवीय दुर्गुण बढ़ते ही जाते हैं। आज जो जितना पढ़ा लिखा, वह उतना ही बड़ा स्वार्थी और आत्म-केन्द्रित व्यक्ति है। पहले के शिक्षित व्यक्ति 'वसुधैव कुटुंबकं' में विश्वास करते थे। अर्थात् उनके लिए सारा संसार ही एक परिवार था। आज के पढ़े-लिखे व्यक्ति के पारिवारिक सदस्यों की सूची में सिर्फ पति-पत्नी और उनके बच्चे हैं। उनके पारिवारिक सदस्यों की सूची में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची, मौसा-मौसी, बहन-बहनोई आदि का कोई स्थान नहीं होता। भारत सरकार और राज्य सरकारों के अंतर्गत परिवार की परिभाषा में भी इसकी झलक साफ देखी जा सकती है। आज के लोग प्रकृति का दोहन और शोषण इस प्रकार कर रहे हैं की जैसे उन्हें अपनी अगली पीढ़ी की चिंता ही ना हो। वृद्धाश्रम में पड़े लोगों की पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करता हूँ, तो लगता है कि सारे लोगों के बच्चे उच्च शिक्षित हैं। ऐसे लोग जिन्होंने अपने बूढ़े माँ-बाप को कचरे की तरह उठाकर फेंक दिया, ऐसे लोग समाज में और लोगों के प्रति किस भावना से काम करते होंगे इसका अंदाजा आप सहज ही लगा सकते हैं। पहले शिक्षा के साथ लोगों की नैतिकता में वृद्धि होती थी, पर आज शिक्षा के साथ इसमें ह्रास होता है। सच पुछो तो इसे देखकर सिर्फ पढ़े-लिखे बच्चों पर ही गुस्सा नहीं आता बल्कि उनके माता-पिता पर भी गुस्सा आता है, जिन्होंने अपने बच्चों को ऐसे व्यवसायिक माहौल में पाला-पोशा जहाँ हर रिश्ता सिर्फ और सिर्फ जरूरत और स्वार्थ पर आधारित है। अरे हमारे यहाँ तो लोग अपने बाप-दादाओं के मरने के बाद उनकी छड़ी को भी संभाल कर रखते थे की ये उनकी निशानी है। हमारा समाज हमेशा से अपने वृद्धजनों की सेवा से प्राप्त संस्कार और उनके द्वारा सांझा किए गए जीवन के कटु अनुभवों से लाभान्वित होता रहा और उनके आशीर्वाद की छाया में निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहा है। गमले में सिर्फ पौधे उगाये जा सकते हैं, पेड़ नहीं। अगर आपको अपने बच्चे को पेड़ की तरह बड़ा, छायादार और आत्मनिर्भर बनाना है तो आपको उन्हें अपने पूर्वजों की समृद्ध विरासत की उपजाऊ भूमि से जोड़ना होगा अन्यथा सब गमले के फूल बनकर रह जायेंगे।

❖❖❖

76वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में परेड निरीक्षण, ध्वजारोहण एवं अधिकारियों को कैमरा स्कैनर प्रदान करते हुए मुख्य आयुक्त सीमा शुल्क अंचल - II

लेख

मर्कट

✍ श्री दीपक शर्मा, मूल्यांकक

डार्विन के विकासवाद का सिद्धांत यह कहता है कि हम सब बंदर थे। पर कभी-कभी यह विचार मन के प्रांगण में कूद के आ जाता है कि कहीं हम अभी भी तो बन्दर ही नहीं हैं। हमें मनुष्य क्यों कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हम 'मनु' के पुत्र हैं इसलिये मनुष्य कहलाते हैं परन्तु एक और सिद्धांत अपनी सत्यता को सिद्ध करने की होड़ में है। उसके अनुसार वास्तव में हम अपने 'मानस' के पुत्र हैं और इसीलिए 'मानस का पुत्र- मनुष्य' कहलाते हैं। अगर इस बात की विवेचना जरा गंभीरता से की जाये, तो आप सब यह मानाने से इंकार नहीं करेंगे कि हमारा सारा जीवन हमारे मानस पर हो रही गतिविधियों का ही परिणाम है। हमारा चरित्र, हमारी आकांक्षाएं, हमारे कर्म और वास्तव में हमारे जीवन में हो रही एक-एक घटना हमारे 'मानस' की गतिविधियों से पूरी तरह से प्रभावित हैं और मानस का चरित्र कैसा होता है। मर्कट-मानस। यह मैं नहीं कह रहा, संत शिरोमणि कबीर दास जी कहते हैं-

कबीर मन मरकट भया, नेक न कहूं ठहराय,
राम नाम बांधे बिना, जित भावे तित जाय।

और इसमें कुछ भी असत्य नहीं है। क्या आपने अपने मानस का कुछ क्षणों के लिए भी निरीक्षण किया है। आप का ही नहीं, मेरा ही नहीं हम सब का मन एक क्षण के लिए भी किसी एक स्थान पर नहीं टिकता है। कभी यहाँ तो कभी वहाँ, कभी इस विचार में तो कभी उस विचार में, कभी किसी पुरानी याद को लेकर खुश होता हुआ तो कभी किसी होने वाली घटना की चिंता करता हुआ। पूरे दिन में शायद एक क्षण के लिए भी किसी एक स्थान पर शांति से नहीं बैठता है। वास्तव में एक स्थान पर शांति से बैठना इसका चरित्र ही नहीं है। इसीलिए तो कहलाता है- 'मर्कट मन'। तो क्या डार्विन ने सही कहा था? हम पहले बंदर थे? ऐसा लगता है कि हमने सिर्फ दो पैरों पर चलना सीख लिया। सत्य तो ये है कि वो बंदर अभी भी हमारे अंदर छुपा हुआ है। हम तब तक अपने को मनुष्य नहीं कह सकते जब तक हम अपने 'मर्कट' मन को वश में करना नहीं सीख जाते।

यदि हम अपने मन का स्थूल रूप से निरीक्षण करे, यानि मोटा-मोटा देखें कि आखिर मन किस प्रकार के विचारों में उलझा रहता हैं, तो हम पाएंगे कि यह मूल रूप से दो ही प्रकार के विचारों के प्रांगण में विचारित होता है, या तो हम किसी भूतकाल में हुई घटना के ताने-बाने में अपने को उलझाए जाते हैं, या किसी भविष्य की योजना में लगे रहते हैं। शायद ही कभी हमारा मन 'वर्तमान' में हो रही गतिविधियों में पूर्ण रूप से तल्लीन होता हो। मैं यह नहीं कहता कि भविष्य की योजना नहीं बनानी चाहिए पर जब आप चौबीसो घंटे सातों दिन सिर्फ भविष्य की ही चिंता में मगन रहो तो निश्चित रूप से चिंता की बात है। किसी दार्शनिक ने कहा है कि 'वो लोग बड़े ही बदनसीब हैं जो हमेशा भविष्य में जीते हैं'। भूतकाल में हुई घटनाओं को अपने मानस पटल पे रुई की तरह धुनना गलत है, यह हमारी तार्किक-बुद्धि तो पूर्ण रूप से जानती है, पर इन घटनाओं की आसक्ति इतनी सघन है, कि इनकी अनुपयोगिता जानते हुए भी मन का मर्कट बार-बार उधर चला ही जाता है।

एक और बात हुई जिसने मन के मर्कट को और सबल किया है। तकनीकी उन्नति और सूचना युग। सूचना के युग के प्रादुर्भाव के बाद ऐसा परिलिक्षित किया गया कि सही सूचना, सही समय पर यदि सही मनुष्य के पास हो तो वह अति बलवान हो जाता है। सही सूचना पाने की होड़ में सभी सूचनाओं को संचित करने की होड़ सी लग गयी। उस पर तकनीकी उन्नति ने इस प्रकार के यंत्रों का उत्पादन किया कि पूरी दुनिया की सभी सूचनाएं आप की उँगलियों पर उपलब्ध हैं। और फिर

एक उद्योग ही स्थापित हो गया जो हर क्षण आप के लिए सूचनाएं उत्पादित कर रहा है। फिर हमारी उपभोगवाद की प्रवृत्ति हैं जो चाहिए ज्यादा चाहिए। ज्यादा भोजन, ज्यादा मनोरंजन, ज्यादा उत्तेजना, ज्यादा मज़ा, आदि आदि। पूरा उद्योग स्थापित है जो आप के लिए मनोरंजन के साधन उत्पादित करने में लगा हुआ है। OTT , You Tube, मोबाइल, टेलीविज़न, सब जगह से हमारे 'मर्कट' को भरपूर खुराक मिल रही है और यदि स्थिति नियंत्रण के बाहर निकल जाए तो डिप्रेशन, तनाव, उच्च रक्तचाप, और न जाने क्या क्या।

यह तो सभी ने कहा कि मन को नियंत्रित करो, पर कैसे? हमारे सारे वेद, पुराण, शास्त्र एक ही बात कहते हैं कि जिस व्यक्ति का मन नियंत्रित रहता है तथा जो सुख और दु:ख में समान भाव से रहता है वही जीवन में सफल होता है। लेकिन सवाल ये है कि आखिर कैसे? और क्या यह इतना आसान है? गीता के छठे अध्याय में अर्जुन कृष्ण से यही पूछते है, तब कृष्ण कहते हैं-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम।
अभ्यासेन तू कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।। (35)

(हे महाबहो! नि:सन्देह मन चंचल और कठिनता से वश में होनेवाला है; परन्तु हे कुंतीपुत्र यह अभ्यास से वश में किया जा सकता है।)

मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि मन के मर्कट को वश में करना बिलकुल भी आसान नहीं है लेकिन थोड़ा ही सही, प्रयास करने में क्या हर्ज है और भगवन श्री कृष्ण भी तो यही कह रहे हैं। बड़ी प्रसन्नता की बात यह है कि प्रयास करने के लिए किसी सामग्री की भी आवश्यकता नहीं है सम्पूर्ण सामग्री आपके पास उपलब्ध है। मन के मर्कट को जिस रस्सी से बांधा जा सकता है वो है 'श्वास'। यह बताने कि जरूरत नहीं है कि हम सब सदैव श्वास लेते हैं। श्वास-प्रश्वास की ये लड़ी जीवन भर हमारे साथ रहती है पर हमने इस पर कभी गौर ही नहीं किया। अगर हम अपने श्वास को एक उपकरण की तरह बुद्धिमानी से उपयोग करें तो अभ्यास करते-करते हम अपने चंचल मन को एक स्थान पर शांतिपूर्वक बैठना सिखा सकते हैं।

आप को करना यह है कि किसी शांत जगह पर जहाँ कोई भी आप को व्यवधान न डाल सके, शांति पूर्वक बैठना है और अपने श्वास-प्रश्वास को देखना है। बस एक दम साधारण रूप से देखना है। सांस आ रही है और जा रही है। सांस गहरी है या छोटी है। बायीं नाक से आ रही है या दायीं नाक से, या दोनों नासिका छिद्रों से बराबर आ रही है। सांस आ रही है तो नासिका छिद्रों के अंदर कहाँ छू रही है। इन्हीं बातो को सचेत हो कर सजग हो कर देखना है। आप पाएंगे कि दो या तीन श्वास-प्रश्वास के बाद ही कोई विचार चुपके से आप के मानस पटल पर आएगा और आपकी सजगता को बहा कर ले जायेगा। पर इस बात से जरा भी दु:खी नहीं होना है। यह जान लेना कि विचार आया था, ही एक विजय है। आज तक तो हम विचारों के तूफान में बहे जा रहे थे, परंतु इस बात की चेतना हो जाना कि विचार मेरे मानस पटल पर आया, एक प्रकार की उन्नति का संकेत हैं। यह प्रक्रिया बार-बार करने से, मानस मर्कट की प्रवृत्ति पर एक रोक लगति है। उसके उन्मुक्त विचरण में बाधा आती है और कुछ क्षणों के लिए ही सही, हम वर्तमान में रहते हैं।

वर्तमान में स्थित रहने की और भी प्रक्रियाएं उपलब्ध हैं और आप अपनी सुविधानुसार उनका उपयोग कर सकते हैं परंतु उद्देश्य यही है कि हम अपने मानस के गुलाम न बने। हम जीवन में जो भी कार्य करते हैं उसका प्रारम्भ हमारे मानस पटल से ही होता है। मनसा - वाचा -कर्मणा का सिद्धांत सर्व विदित है। हमारे मानस पटल पर स्थित पूर्वाग्रहों का सघन पुंज हमारे कर्मों की दिशा को निर्धारित करता है। हमारे कर्मों में सदैव हमारे मानस पटल पर स्थित विचारों के रंग होते हैं। इससे हमारी प्रतिभा सीमित हो जाती है हमारी सोच क्षुद्र हो जाती है। डार्विन ने सही कहा था कि हम सब पहले बंदर थे, पर उसने यह नहीं बताया कि पहले हम चार पैरों पर चलते थे और तब हमारा मष्तिष्क, हृदय और पेट एक ही सीध में रहते थे। जैसे ही हमने दो पैरो पर चलना सीख लिया हमारा मस्तिष्क ऊपर, हृदय बीच में और पेट सबसे नीचे हो गया। पशुओं के लिए उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपने अस्तित्व की रक्षा है। हम मनुष्य इसीलिए हैं क्योंकि 'अस्तित्व-वृत्ति' हमारे लिए एक गौड़ प्रश्न है।

❖❖❖

कहानी

प्रायश्चित

✍ कीर्ति राठोड, अधीक्षक

सुबह-सुबह बड़े दिनों के बाद ठंडी हवाओं के झोंको ने हमें जगाया था। मोबाइल फोन रात का सायलेंट पे रखना या फिर बंद करके सोना। मैं इस आदत को एक अच्छी आदत समझती थी। सुबह सात बजे जब मोबाइल चेक किया तो मेरे मायके के दोस्त और रिश्तेदार प्रवीण के चार मिसकॉल थे, इसलिए मैंने उसी वक्त उसे फोन लगाया, फोन उसकी बेटी नम्रता ने उठाया, जैसा नाम वैसे ही गुण, बोली बुआ मेरी शादी तय हुई है और पापा आपको कार्ड देने आ रहे थे, लेकिन आपने फोन नहीं उठाया। मैंने कहा, कोई बात नहीं बेटी, कार्ड पोस्ट कर दो या फिर वाट्सएप पर भेज दो, मैं शादी में जरूर आऊँगी।

8 दिसंबर को शादी थी, कल तक मेरी गोद में खेलती बच्ची आज इतनी बड़ी हो गई। बहुत रोमांचित हो गई थी मैं।

शादी के दिन सुबह से पेट में गड़बड़ होने के कारण मेरी हालत कुछ नाजुक थी, पति ने सलाह दी कि ऐसी हालत में जाना ठीक नहीं है लेकिन मायके का दोस्त, बचपन का साथी, ना जाओ तो बुरा मानेगें। बड़ी हिम्मत से मैं तैयार हो गई। शाम के समय दादर से बोरीबली का अंतर काटना मुश्किल तो था, फिर भी उत्साह में सब कुछ अच्छा लगता था। करीब 8 बजे हम शादी में पहुँचे। मुझे देखकर प्रवीण और उनका परिवार बहुत ही खुश हुए। मैं कुछ जाने-पहचाने चेहरों को देखकर खुश हो रही थी। मायके की बातें करके आनंद ले रही थी तभी मेरे सामने और एक परिचित बुजुर्ग आ गए। ओह ईश्वरभाई!! कह के मैंने उनके चरणस्पर्श किए, मुझे देखकर उनके चेहरे पर जो खुशी थी, मैं बयां नहीं कर सकती। मेरी माँ के मौसेरे भाई थे। अपने बेटे रोहित को मेरे बारे में बड़े गर्व से बता रहे थे कि यह मेरी बहन की बेटी है जो आज मंत्रालय में अधीक्षक है, समाज में भी उसका अच्छा नाम है बहुत मिलनसार है, जरूरतमंद को मदद करना भी जानती है।

यह सब सुनते मुझे कोई खुशी नहीं हुई उनकी बातें और उनकी सुख मुझे अपने बचपन में ले गई। तब शायद मेरी उम्र 9-10 साल की होगी, मैंने अपने पापा को सात साल की उम्र में खो दिया था, मेरा छोटा भाई चार साल का था। पापा के अचानक निधन से हमारे परिवार पर मानो आसमान टूट पडा था। जो कुछ संपत्ति थी वो भी दवाइयों और अस्पताल पर खर्च हो चुकी थी। उसी समय से हम, जो भी काम मिलता था, वो करते थे, बड़ा संघर्ष था। शाम को खाना मिलेगा कि नहीं, वो भी पता नहीं रहता।

शादी से लौटकर आने के बाद मुझे नींद नहीं आयी, दो दिन तक मैं इस बारे में सोचती रही। मैंने प्रवीण से ईश्वर भाई का नंबर लिया और दूसरे ही दिन उनसे मिलने उनके घर चली गई। मैंने ईश्वर भाई को बताया, भैया मेरी माँ का घर आपके घर से ज्यादा दूर नहीं है...

ईश्वर भाई हमारे पड़ोस में ही रहते थे, उनकी शादी तय हुई थी। मेरे पिताजी का देहांत होने के कारण, मैं शादी-ब्याह में जाना टालती थी, मेरी माँ ने अपने पास संभालकर रखे हुए दो रुपये जो आज के पांच सौ रुपये के बराबर हैं दिए, कवर बना कर दिए और उन्हें देने के लिए कहा।

9-10 साल की उम्र, मैंने वो लिफाफा ईश्वर भाई को नहीं दिया। लिफाफा फाड़ के मैंने अपने लिए 20 पैसे की मूंगफली खरीदी। 20 पैसे की चाकलेट भी खरीदी। मैं बहुत खुश थी रोज स्कूल में बच्चें जो चीजें खाते थे

और मैं उन्हें देख उनका मुँह ताकती थी।

ईश्वर भाई के मिलने से 6 माह पूर्व हमारे पारिवारिक मित्र से मेरी इस बारे में बात हुई थी कि मैंने बचपन में ऐसा किया था। मुझे उन्होंने सलाह दी थी कि अब आप ये बात अपनी माँ को बता दो। मैंने कहा हिम्मत नहीं है। आज भले ही मेरी माँ 85 साल की है, दिमाग एकदम सही है और यह बात वो सहन नहीं कर पाएगी। मेरी माँ के मानस पटल में जो मेरी छवि है वो मलिन हो जाएगी।

शादी से लौटकर आने के बाद मुझे नींद नहीं आयी, दो दिन तक मैं इस बारे में सोचती रही। मैंने प्रवीण से ईश्वर भाई का नंबर लिया और दूसरे ही दिन उनसे मिलने उनके घर चली गई। मैंने ईश्वर भाई को बताया, भैया मेरी माँ का घर आपके घर से ज्यादा दूर नहीं है, वो आपको याद करती है। क्या आप और भाभी मेरे साथ उनको मिलने मेरे साथ चलोगे? मैं गाड़ी लेकर आयी हूँ। अपने बेटे की सहमति लेकर मेरे साथ मेरी माँ से मिलने आये। उनको देखकर माँ बहुत खुश हो गई, मेरी तारीफ करने लगी कि मैं उनका बहुत ख्याल रखती हूँ। कभी किसी से वीडियो कॉल से बात करवाती है तो आज आपको लेकर आ गई।

मेरे छोटे भाई ने चाय नाश्ता का प्रबंध किया, बहुत सारी बातें हुई। जब ईश्वर बाबू बोले कि अब हमें चलना चाहिए, तब मैंने अपनी माँ को यह बात बतायी कि माँ मैं आपकी गुनहगार हूँ, मुझे माफ करना। ये ईश्वर भाई बैठे है उनके सामने आप मुझे जो सजा देना चाहती हो दे सकती हो और मेरी आँखों से गंगा-यमुना बह रही थी। मेरी माँ ने कांपते हुए हाथों से मेरे माथे पर हाथ रखा और कहा कि बेटा प्रायश्चित तो तूने कर लिया अब कैसी सजा। ईश्वर भाई की आँखों से भी आँसू आ गए। उन्होंने मुझे कहा कि बेटी तुम बड़ी हिम्मतवाली और नेकदिल इंसान हो। इतना आसान नहीं इतने लोगों से सामने 35 साल पुरानी अपनी गलती को सामने रखना। ईश्वर भाई की पत्नी मेरी भाभी मुझे गले लगाते हुए बोली बेटी खूब तरक्की करोगी। हमारे आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेंगे।

सभी माताओं को समर्पित...

❖❖❖

काव्यधारा

एक श्याम वर्ण बाला

✍ **शरदचन्द्र झा, अधीक्षक**

एक श्याम वर्ण बाला...
उजड़े बाल धूल-धूसरित काया,
फटे कपड़े तन पर नयनों में ज्वाला,
एक श्याम वर्ण बाला।।

टोकरी भर सूखे पत्तों की तलाश में,
तपती दोपहर थी सूरज आकाश में,
रोज़ ही फ़क़्त दो जून रोटी की ख़ातिर,
दिन भर फिरते रहती जैसे फेरीवाला
एक श्याम वर्ण बाला।।

आधी रात बिन नींद बीत जाती,
राग-रागिनी छेड़ती गाती मुस्कुराती,
मुख से ध्वनि मधुर निकलती उसकी,
ज़ोर से बच्चे पढ़ते जैसे वर्णमाला
एक श्याम वर्ण बाला।।

बुजुर्गों का साया तक नहीं सर पर,
वरना जीत जाती बैरन गरीबी पर,
आशा धूमिल सी दिखती पाने शिक्षा की,
वरना जाती वह भी सखियों संग पाठशाला
एक श्याम वर्ण बाला।।

❖❋❖

आजादी का अमृत महोत्सव - साइकिल रैली का आयोजन

अकाम के अंतर्गत स्वतंत्रता पूर्व कर नीतियों बनाम सीमाशुल्क निपटान प्रक्रियाओं में अभूतपूर्व कमी को प्रचारित करते हुए दिनांक 06.06.2022 को जेएनसीएच परिसर में आयोजित नुक्कड़ नाटक

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत सीमाशुल्क कार्य प्रणालियों के सरलीयकरण पर विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति में ऑनलाइन वेबिनार

अकाम आयोजन के अंतर्गत नशामुक्ति पर चित्रकला और स्लोगन प्रतिस्पर्धा दिनांक 10.06.2022

अकाम आयोजन के अंतर्गत शिक्षक दिवस के अवसर पर शालेय सांस्कृतिक कार्यक्रम में सीमाशुल्क का परिचय समारोह

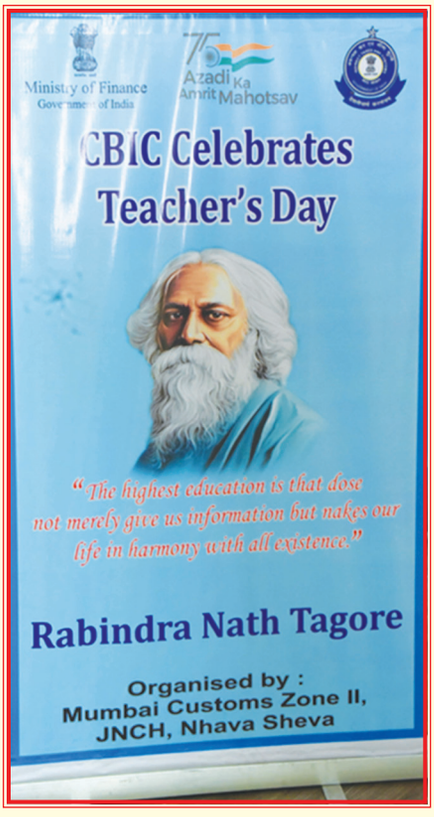

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत पौधारोपण का आयोजन

आजादी का अमृत महोत्सव - वाकेथोन का आयोजन मई - 2022

अकाम आयोजन के अंतर्गत नवकार सी एफ एस में जब्त की गई रुपये 15 करोड़ मूल्य की कुल 90 लाख सिगरेट स्टिक्स को नष्ट किया गया।

हर घर तिरंगा अभियान - अकाम आयोजन के अंतर्गत राष्ट्रीय ध्वज वितरण / आरोहण

विश्व पटल पर पहचान बनाती हिन्दी

सृष्टि तिवारी
सुपुत्री श्री सुजीत तिवारी, अधीक्षक

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है, हिन्दी दुनिया भर में हमें सम्मान दिलाती है। हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। यह दुनिया भर में हमें सम्मान, स्वाभिमान और गर्व दिलाती है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली को भारत की राष्ट्रभाषा बनाई जाये और इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से सम्पूर्ण भारत में प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस दिन के महत्व को देखते हुए हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाये जाने का ऐलान किया। पहला हिन्दी दिवस, 14 सितंबर, 1953 को मनाया गया था।

हिन्दी विश्व पटल पर भी अपना खूब पहचान बना रही है। संयुक्त राष्ट्र सभा ने भी अब हिन्दी को अपने अधिकृत भाषा में शामिल कर लिया है। 10 जून को संयुक्त राष्ट्र सभा ने यह घोषणा की, कि हिन्दी में सरकारी और गैर-सरकारी सूचनाओं का प्रसारण किया जाएगा। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी और भारत को विश्व भर में सम्मान दिलाया था। आज हिन्दी में बात करना सम्मान की बात मानी जाती है, शर्म की नहीं।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर हिन्दी में भाषण देते हैं और रेडियो पर हिन्दी में 'मन की बात' कहते हैं, जिससे वह सारे देशवासियों से अपने आप को जोड़ पाते हैं। हिन्दी में बात करने से सारे देशवासी भी अपने आप को एक दूसरे से एवं प्रधानमंत्री से जोड़ पाते हैं। अभी कुछ दिनों पहले भाला फेंक प्रतियोगिता में अंतर्राष्ट्रीय पदक धारक नीरज चोपड़ा ने प्रेस वार्ता में अंग्रेजी में सवाल पूछ रहे रिपोर्टर को यह कहकर शर्मिंदा कर दिया कि 'क्यों भाई हिन्दी नहीं आती क्या?'

आज हमें अटल बिहारी वाजपेयी, नरेंद्र मोदी और नीरज चोपड़ा जैसे निर्भीक व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर सम्मान दिला सकें।

'गर्व हमें है हिन्दी पर, शान हमारी हिन्दी है,
कहते सुनते हिन्दी हम, पहचान हमारी हिन्दी है'

आप सबको हिन्दी दिवस कि हार्दिक शुभकामनाएं।

हौसलों की ऊँजी उड़ान है,
कर से अवगत हो रहा हर इंसान है,
अब तो हर शंका का त्वरित समाधान है,
ऐसा उदार अपना अप्रत्यक्ष कराधान है,
जो बनाता भारत देश महान है।।

जल और पर्यावरण संरक्षण,
नारी सशक्तीकरण,
और करके प्रति ईमानदारी
एक कदम सुदृढ़ 'कल' के लिए

- अजीत कुमार पाण्डेय

यह रेखाचित्र कुमारी श्रेया सक्सेना,
सुपुत्री श्री रूपेश एस. सक्सेना, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा बनाये गये हैं।

चित्र : डिम्पल चारण एवं कनक चारण

स्वच्छता भक्ति के
बाद दूसरी सबसे
महत्वपुर्ण चीज है
- महात्मा गांधी